

**पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका**

**अवश्य पढ़ें-**  
**निखिल-मंत्र-विज्ञान**

14 ए, मेन रोड,  
हार्डकोर्ट कॉलोनी  
जोधपुर (राजस्थान)

फोन : (0291) 2624081, 2638209  
दिल्ली कार्यालय : आरोग्य धाम,  
गुजरात अपार्टमेंट के पीछे, जोन- 4/5  
पीतमपुरा, नई दिल्ली- 34  
फोन : 011- 27029044, 27029045

**मिथिला**  
**वर्णन**

(झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक)

News & E-paper : [www.mithilavarnan.com](http://www.mithilavarnan.com)

**सभी दंत-समस्याओं का एक समाधान**

**डॉ. नरेन्द्र मेमोरियल डेंटल सेंटर**

138 को-ऑपरेटिव कॉलोनी (बोकारो)  
**दांत एवं मुंह**  
**संबंधी सभी बीमारियों के**  
**इलाज की पूर्ण सुविधा।**

समय : सुबह 9.30 से दोपहर 2.30 बजे तक  
संध्या 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक  
(शनिवार अवकाश)

**डॉ.निकेत चौधरी (संध्या में)**  
**डॉ.अभिषेक कुमार, बीडीएस**

वर्ष : 28 :: अंक : 40

बोकारो, रविवार, 01 जुलाई, 2018

पृष्ठ : 8 :: मूल्य : ₹ 2.00

## हूल दिवस पर मुख्यमंत्री का ऐलान- सशक्त झारखंड बना साकार करेंगे शहीदों का सपना



### विशेष संवाददाता

**रांची :** 'हमारा संकल्प है कि समृद्ध व सशक्त झारखंड बनाकर शहीदों के सपने को साकार करें। रत्नगर्भा झारखंड को समृद्ध बनाकर ही हम वीर सपूतों के सपने को साकार कर सकते हैं। आने वाले वर्षों में झारखंड देश के समृद्धशाली राज्यों में शुमार होगा।' यह कहना है सूबे के मुख्यमंत्री रघुवर दास का। हूल दिवस के मौके पर मुख्यमंत्री श्री दास ने यह ऐलान किया। उन्होंने राजधानी रांची स्थित सिद्धो-कान्हू पार्क में सिद्धो-कान्हू की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के बाद उक्त बातें कही। उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ संताल हूल के अमर शहीदों- सिद्धो, कान्हू, चांद, भैरव, फूलो और झानो सहित सभी वीरों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि समृद्धशाली झारखंड के निर्माण में सभी प्रदेशवासियों से सहयोग की अपील

की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डा. सुनील कुमार वर्णवाल भी उपस्थित थे।

**जल, जंगल, जमीन हमारी अमानत**  
सिद्धो-कान्हू की प्रतिमा पर माल्यार्पण कार्यक्रम के बाद मुख्यमंत्री श्री दास ने स्थानीय होटल बीएनआर चाणक्य में जनजातीय विकास संबंधी बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि गरीब, आदिवासी, अनुसूचित जाति, पिछड़ा, शोषित वर्ग के युवा खुद किसी से कम नहीं हैं। अपनी मेहनत, लगन और ईमानदारी से काम करके ही हम बड़ा बन सकते हैं। राज्य सरकार हर कदम पर आपके साथ है। उन्होंने कहा कि झारखंड के युवा उद्यमी हैं। आगे बढ़ने के लिए जीवन में रिस्क लेना पड़ता है। देश की आजादी के लिए भगवान बिरसा मुंडा, सिद्धो, कान्हू ने अपना सर्वस्व

बलिदान किया है। ऐसे ही वीर सपूतों की मदद से आज हमारा देश आजाद है। हम सब को देश के लिए कुछ करने का अवसर मिला है। इसलिये जीवन में सपना बड़ा देखिए। दुनिया की कोई ताकत आपको सफल होने से नहीं रोक सकती।

**बंद हो आदिवासी के नाम की राजनीति**  
मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि आदिवासी बहुत सीधे सरल होते हैं और कुछ लोग उनका फायदा उठा रहे हैं। आदिवासियों के नाम पर चल रही राजनीति बंद होनी चाहिए। अब सिर्फ विकास की राजनीति होगी, आदिवासियों के विकास की राजनीति होगी। अब आदिवासी विकास के तरफ बढ़ रहे हैं। आगे बढ़ने के लिए हमें दूरदर्शी नीति बनानी होगी, ताकि हम योजनाबद्ध तरीके से काम कर सकें। उन्होंने कहा कि कुछ लोग आदिवासियों को आगे बढ़ने से रोकना चाहते हैं, लेकिन सरकार उनके मंसूबे कामयाब नहीं होने देगी। जल, जंगल, जमीन किसी के लिए नारा होगा, लेकिन यह हमारे लिए अमानत है, हमें इसे बचाना है। हम गरीब के विकास के लिए कार्य करेंगे। मेरा संकल्प है गरीब के जीवन में बदलाव लाना, झारखंड से गरीबी मिटाना है। झारखंड को पीछे ले जाने वाले और नुकसान पहुंचाने वालों से युवा पीढ़ी सावधान रहे। राज्य किसी एक का नहीं, अपनी जिम्मेदारी निभाएं, ताकि झारखंड देश-दुनिया का सिरमौर बन सके।

**आगे भी रहूंगा 'सीएम'**  
मुख्यमंत्री ने कहा कि मैंने गरीबी की वेदना सही है। गरीब का कष्ट (शेष पेज-7 पर)

## इंटक की वैमनस्यता दूर पुनः सशक्त होंगे मजदूर

**संजीवा रेड्डी व राजेन्द्र सिंह के साथ हुए ददई दुबे**



### कार्यालय संवाददाता

**बोकारो :** कांग्रेस से सम्बद्ध श्रमिक संगठन 'इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस' (इंटक) में वर्षों से चला आ रहा विवाद अब समाप्त होने के कगार पर है। एक लम्बे अंतराल से इंटक में वर्चस्व को लेकर चली आ रही आपसी वैमनस्यता दूर हो चुकी है। इसके साथ ही सार्वजनिक क्षेत्र के विभिन्न उपक्रमों में कार्यरत मजदूरों के साथ-साथ 'इंटक' एकबार पुनः सशक्त होने की ओर अग्रसर है। धनबाद के पूर्व सांसद व इंटक के एक गुट के अध्यक्ष चन्द्रशेखर दुबे उर्फ ददई दुबे ने इंटक के दूसरे गुट के अध्यक्ष डा. जी संजीवा रेड्डी व महामंत्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह के साथ अपने गुट के विलय की घोषणा की है। इस आशय का निर्णय हैदराबाद में डा. संजीवा रेड्डी के आवास पर इंटक के दोनों गुटों के नेताओं की हुई बैठक में लिया गया। इस बैठक में इंटक के दोनों गुटों के नेता क्रमशः डा. संजीवा रेड्डी, ददई दुबे व राजेन्द्र प्रसाद सिंह सहित अन्य लोग मौजूद थे। इंटक के राष्ट्रीय सचिव एवं यूनियन के राष्ट्रीय महामंत्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह के पुत्र कुमार जय मंगल सिंह ने बताया कि इस बैठक में इंटक के राष्ट्रीय अध्यक्ष ददई दुबे ने अपनी राष्ट्रीय इंटक कमिटी का विलय डा. जी संजीवा रेड्डी की इंटक कमिटी में कर दिया। साथ ही न्यायालय में जो मुकदमा चल रहा है, उसे खत्म करने को लेकर आगामी 12, 13 व 15 जुलाई को दिल्ली स्थित इंटक भवन में बैठक रखी गई है। इस बैठक के बाद 27 व 28 जुलाई को उदयपुर में इंटक की कार्यकारिणी समिति (वर्किंग कमिटी) की बैठक में श्री दुबे एवं उनके समर्थकों को इंटक में कौन सा पद मिलेगा, संविधान के तहत इसकी घोषणा कार्यकारिणी की बैठक में की जाएगी। फिर पूरी नवगठित कार्यकारिणी समिति के पदाधिकारी कांग्रेस के (शेष पेज-7 पर)

**The Bokaro MALL**

**BOKARO MALL**  
Pride of Bokaro

Along with-

adidas, airtel, Bata, BLACKBERRY'S, Lee, PVR CINEMAS, Turtle, BIG BAZAAR, Reliance trends, Samsone, PETER ENGLAND, VIP, Alankar, P. B. B.

**हूल दिवस पर**  
**झारखण्ड के वीर शहीदों**  
**को नमन।**

**amarbauriofficial** **@amarbauri** **/amar\_bauri** **www.amarkumarbauri.com** **Amor Kumar Bauri**



## संपादकीय

# पथलगड़ी सरकार के लिए सिरदर्द

झारखंड में पथलगड़ी की समस्या सरकार के लिए सिरदर्द बन गयी है। झारखंड के आदिवासी बहुल चार जिलों के ग्रामीण इलाकों में हो रही पथलगड़ी की खबरों के बाद भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने राज्य सरकार को इस मसले पर कड़ाई बरतने के निर्देश दिये हैं। राज्य के खूंटी, गुमला, लोहरदगा और चाईबासा इलाकों में कुछ आदिवासी संगठन न तो स्कूल चलने दे रहे हैं और न ही सरकारी अधिकारियों को गांवों में प्रवेश करने दे रहे हैं। आदिवासी ग्रामसभा ने जो फरमान जारी कर रखा है, उसके तहत पथलगड़ी किये गये गांवों में न सिर्फ बाहरी लोगों का प्रवेश वर्जित किया गया है, बल्कि अब बच्चों के स्कूलों पर भी रोक लगाये जा रहे हैं। इसके चलते इन क्षेत्रों में फिलहाल बच्चों की पढ़ाई भी बाधित है। जबकि तथाकथित आदिवासी समाज उधारकों का कहना है कि वे सब कुछ संविधान के तहत कर रहे हैं, जिसमें उन्हें यह अधिकार दिया गया है कि वे गांवों में अपना कानून और विधान लागू कर सकते हैं। स्कूलों में अब ग्रामसभा द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रम ही पढ़ाये जाएंगे। यह सच है कि पथलगड़ी आदिवासियों की प्राचीन परंपरा है, जिसमें गांवों के बाहर शिलालेख लगाकर अर्वाचित लोगों का गांवों में प्रवेश वर्जित किया जाता था। इसका इस्तेमाल आदिवासी अपनी जमीन की पहचान के लिए भी करते थे, लेकिन आजादी के बाद संविधान में अनुच्छेद 13, 19(5)(6) के तहत ग्रामसभा को कुछ अधिकार दिये गये थे। अब इसी को गलत तरीके से परिभाषित कर लोगों को सरकारी योजनाओं और अनुदानों का भी बहिष्कार करने के लिए बाध्य किया जा रहा है। आदिवासी सेगेल अभियान के नेता पूर्व सांसद सालखन मुर्मु का भी मानना है कि पथलगड़ी से समस्या का समाधान नहीं हो सकता। उन्होंने पथलगड़ी के नाम पर आदिवासी समाज में असंतोष, आक्रोश और हिंसा को बढ़ावा दिये जाने को गलत करार दिया है। जबकि राज्य के पांच मंत्री, दो सांसद, एक विधायक और एक पूर्व मुख्यमंत्री ने पथलगड़ी के नाम पर जो कुछ हो रहा है, उसका समर्थन किया है। वहीं भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और सांसद लक्ष्मण गिलुआ का कहना है कि पारंपरिक पथलगड़ी का कहीं विरोध नहीं है, लेकिन एक साजिश के तहत खूंटी के कुछ गांवों में जो पथलगड़ी की जा रही है, वह वास्तव में विपक्षी पार्टियों द्वारा ग्रामीणों को बरगलाने की एक साजिश है। खूंटी के भाजपा सांसद कड़िया मुंडा का मानना है कि 'सरकार पथलगड़ी को लेकर गंभीर नहीं है। इसे सामान्य पथलगड़ी के रूप में देखना भूल होगी। सरकार को इसके पीछे की सोच और उद्देश्यों तक पहुंचना होगा, तभी इसका समाधान मिलेगा। मुंडा समाज के पथलगड़ी के रिवाज से कभी किसी ने छेड़छाड़ नहीं की है, लेकिन अभी जो पथलगड़ी के नाम पर मुंडा समाज से हटकर लोग काम कर रहे हैं, वह मुंडाओं को बरगलाने का भी प्रयास है। यह गलत है। समय रहते इसे नहीं रोका तो यह पूरे राज्य में फैल जाएगा, जो झारखंड की सेहत के लिए ठीक नहीं होगा।' राज्य सरकार के नगर विकास मंत्री सी पी सिंह ने भी इन घटनाओं के पीछे समाज-विरोधी तत्वों का षडयंत्र बताया है। जबकि कई लोग इस सबके पीछे ईसाई मिशनरी का हाथ बता रहे हैं। ऐसी आशंका जायज भी मानी जा सकती है, क्योंकि खूंटी में दुष्कर्म की एक हृदयविदारक घटना के पीछे जिन लोगों का नाम सामने आया, उनका संबंध मिशनरी से सीधे तौर पर है। इसके बाद आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए गांव में गयी पुलिस के साथ जो कुछ हुआ और अपहृत किये गये चार पुलिसकर्मियों को बचाने में पुलिस बल को जो मशक्कत करनी पड़ी, वह बेहद चिन्ताजनक है। ऐसी स्थिति में विपक्षी दलों को भी महज वोट बैंक की खातिर अशांति और हिंसा की आग को हवा देने से परहेज करना चाहिए। साथ ही सरकार को समय रहते भयावह और विकराल होती जा रही इस समस्या के समाधान की दिशा में आवश्यक पहल करनी चाहिए।

मिथिलाक्षर (तिरहुता लिपि) सीखू : गतांक सं आगू-

**तम तत तत ननेश्वर।**  
क + त्र = कै, थ + त्र = त्रै इत्यादि  
**घेत कतय त्रैक? कैता त्रैम त्रैका**  
**त्रैश्व पौसा मटैत छुनेक।**  
क + उ = कु, थ + उ = कु इत्यादि  
**कोशै श्रोतह। गोपातक**  
**घोड़ा छोड़े छुनि। कोशै**  
**कोन कोकानक थिक?**  
क + उ = कु, थ + उ = कु इत्यादि  
**कोशै पौसा गाछ पर त्रैक**  
**कोका श्रोका थ्रि। कोकी**  
**पर डोडी कोशै के थेत त्रैक**  
**छुनि। नोशै कोशै ते त्रैका**  
**लोरीनाथ कोशै जोशै त्रैक**  
**छुनि। कोडी नहि थैताई।**

क्रमशः

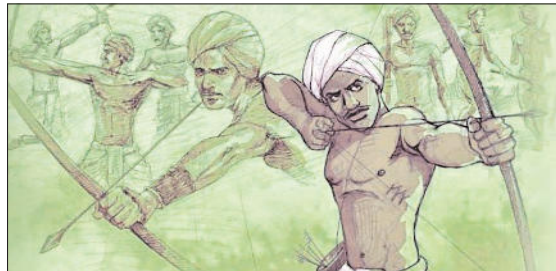
पाठकों के अनुरोध पर मिथिलाक्षर सिखाने की यह कड़ी हमने प्रारंभ की है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई-मेल पर भेज सकते हैं—  
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234  
facebook.com/mithilavarnan @mithila\_varnan  
Visit us on : [www.mithilavarnan.com](http://www.mithilavarnan.com)  
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

# हूल दिवस- स्वाधीनता-संग्राम का प्रथम शंखनाद

हूल क्रान्ति दिवस प्रत्येक वर्ष 30 जून को मनाया जाता है। भारतीय इतिहास में स्वाधीनता संग्राम की पहली लड़ाई से पहले संताल हूल के कारण अंग्रेजों को भारी क्षति उठानी पड़ी थी। सिद्धो तथा कान्हो, दो भाइयों के नेतृत्व में 30 जून 1855 को साहेबगंज जिले के भगनाडीह गांव से प्रारंभ हुए इस विद्रोह के मौके पर सिद्धो ने घोषणा की थी- करो या मरो, अंग्रेजों हमारी माटी छोड़ो। इतिहासकारों के अनुसार संताल परगना के लोग प्रारंभ से ही वनवासी स्वभाव के तथा प्रकृति प्रेमी और सरल रहें हैं। इसका जमींदारों और बाद में अंग्रेजों ने खूब लाभ उठाया। इतिहासकारों का कहना है कि इस क्षेत्र में अंग्रेजों ने राजस्व के लिए संथाल, पहाड़ियों तथा अन्य निवासियों पर मालगुजारी लगा दी थी। इसके बाद न केवल यहां के लोगों का शोषण होने लगा, बल्कि उन्हें मालगुजारी भी देनी पड़ रही थी, जिस कारण यहां के लोगों में विद्रोह पनप रहा था। वहीं विद्रोह हूल (क्रान्ति) बनकर फूट पड़ा, जिसे स्वाधीनता संग्राम का प्रथम शंखनाद कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जानकारों के अनुसार हूल विद्रोह भले ही संताल हूल हो, परंतु संताल परगना के समस्त गरीबों और शोषितों द्वारा शोषकों, अंग्रेजों एवं उसके कर्मचारियों के विरुद्ध स्वतंत्रता आंदोलन था। इस जन आंदोलन के नायक भगनाडीह निवासी भूमिहीन, किन्तु ग्राम प्रधान चुनी मांडी के चार पुत्र सिद्धो, कान्हो, चांद और भैरव थे। इन चारों भाइयों ने लगातार लोगों के असंतोष को एक आंदोलन का रूप दिया। उनका संदेश दुगडुगी पिटवाकर स्थानीय मोहल्लों तथा गांवों तक पहुंचाया गया। इस दौरान लोगों ने साल वृक्ष की टहनियों को लेकर गांव-गांव की यात्राएं की और लोगों में नयी चेतना जगायी। आंदोलन को कार्यरूप देने के लिए परंपरागत शस्त्रों से लैस होकर 30 जून 1855 को 400 गांवों के लगभग 50000 आदिवासी लोग भगनाडीह पहुंचे और आंदोलन का सूत्रपात हुआ। इसी सभा में यह घोषणा कर दी गयी कि वे अब मालगुजारी नहीं देंगे। इसके बाद अंग्रेजों ने सिद्धो, कान्हो, चांद तथा भैरव, चारों भाइयों को गिरफ्तार करने का आदेश दिया, परंतु जिस पुलिस दारोगा को वहां भेजा गया था, संतालियों ने उसकी गर्दन काटकर हत्या कर दी। इस दौरान सरकारी अधिकारियों में भी इस आंदोलन को लेकर भय प्राप्त हो गया था। भागलपुर की सुरक्षा कड़ी कर दी गयी थी। इस क्रान्ति के संदेश के कारण संताल में अंग्रेजों का शासन लगभग समाप्त हो गया था। अंग्रेजों द्वारा इस आंदोलन को दबाने के लिए इस क्षेत्र में सेना भेज दी गयी और जमकर आदिवासियों की गिरफ्तारियां की गयीं और विद्रोहियों पर गोशियां बरसने लगीं। आंदोलनकारियों को नियंत्रित करने के लिए मार्शल लॉ लगा दिया गया। आंदोलनकारियों की गिरफ्तारी के लिए अंग्रेज सरकार द्वारा पुरस्कारों की भी घोषणा की गयी। बहराइच में अंग्रेजों और आंदोलनकारियों की लड़ाई में चांद और भैरव शहीद हो गए।

प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार हंटर ने अपनी पुस्तक 'एनल्स ऑफ रूलर बंगाल' में लिखा है कि संतालों को आत्मसमर्पण की जानकारी नहीं थी, जिस कारण दुगडुगी बजती रही और लोग लड़ते रहे। आंदोलन का विस्तार जुलाई 1855 में संतालों ने जब विद्रोह का विगुल बजाया तो शुरूआत में यह आन्दोलन सरकार विरोधी



आन्दोलन नहीं था, पर जब संतालों ने देखा कि सरकार भी जमींदारों और महाजनों का पक्ष ले रही है तो उनका क्रोध सरकार पर भी टूट पड़ा। संतालों ने अत्याचारी दारोगा महेश लाल को मार डाला। बाजार, दुकान सब नष्ट कर दिये और थानों में आग लगा दी। कई सरकारी कार्यालयों, कर्मचारियों और महाजनों पर संतालों ने आक्रमण किया। इसके चलते कई बेकसूर भी मारे गए। भागलपुर और राजमहल के बीच रेल, डाक, तार सेवा आदि सेवा भंग कर दी गई। संतालों ने अंग्रेजी शासन को समाप्त करने की शपथ ले ली थी। संताल विद्रोह की आग हजारीबाग, बांकुड़ा, पूर्णिया, भागलपुर, मुंगेर आदि जगहों में फैल रही थी।

## दमन का बहादुरीपूर्ण जवाब

ब्रिटिश सरकार संताल की आक्रामकता देखकर अन्दर से हिल चुकी थी। सरकार ने इस हिंसक कार्रवाई को सख्ती से दबाने का ऐलान किया। बिहार के भागलपुर और पूर्णिया से सरकार के द्वारा घोषणापत्र जारी किया गया कि अब संताल के विद्रोह को जल्द से जल्द कुचल दिया जाए। कलकत्ता के जार बरों और पूर्णिया से सेना की एक टुकड़ी संतालों का दमन करने के लिए भेजी गई। फिर उसके बाद दमन का नग्न नृत्य शुरू हुआ। संताल के पास अधिक शक्ति नहीं थी और पर्याप्त शस्त्र-अस्त्र भी नहीं थे। मात्र तीर और धनुष से वे कितने दिन टिकते। फिर भी उन्होंने इस दमन का जवाब बहुत बहादुरी से दिया। अंततः कई संतालों को गिरफ्तार कर लिया गया और 15 हजार से अधिक संताल सैनिकों द्वारा मार गिराये गये। संथाल के नेता भी गिरफ्तार कर लिए गये और मारे गये। अपने नेता की गिरफ्तारी से संतालों का मनोबल टूट गया और फरवरी 1856 तक संथाल विद्रोह समाप्त हो गया। भले ही हजारों संतालों ने अपने हक के लिए कुर्बानी दी, पर उन्होंने ये साबित कर दिया कि निरीह जनता भी दमन और अत्याचार बर्दाश्त नहीं कर सकती। सरकार द्वारा संतालों की मांगों को बाद में पूरा करने का प्रयास किया जाने लगा। कालांतर में सरकार ने संतालपरगना को जिला बनाया। फिर भी आदिवासियों पर दमन होता ही रहा। संथाल विद्रोह की प्रेरणा लेकर आदिवासियों ने आगे भी सरकार के खिलाफ कई विद्रोह किये। अब सरकार हूल दिवस के उपलक्ष्य में आदिवासी-हित को लेकर लगातार अपनी कटिबद्धता दिखा रही है।

# ये कैसा विपक्ष ?

## कैप्टन संजय



किसी भी लोकतांत्रिक देश में विपक्ष की बड़ी ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सत्ता पक्ष जब भी निरंकुश हो जाता है तो वह विपक्षी ही है, जो उसकी गलतियों को लेकर विरोध जताता है और उसे आईना दिखाने का काम करता है। इसका कहीं न कहीं विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। लेकिन दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत की विडंबना देखिए कि यहां का विपक्ष देश के उत्थान, देश की सुरक्षा और राष्ट्र-समृद्धि से कहीं अधिक सत्ता और सस्ती लोकप्रियता के स्वार्थ में आकंट डूबा हुआ है। इतना डूबा है कि उसे राष्ट्रीय सुरक्षा का भी खयाल नहीं। इसकी बानगी हाल के दिनों में सर्जिकल स्ट्राइक को लेकर बार-बार विपक्ष की हाथ-तौबा के जरिये सामने आ चुकी है। पाकिस्तान में सेना के सर्जिकल स्ट्राइक को लेकर विपक्ष के नेताओं का अनर्गल सवाल उठाना इससे संबंधित वीडियो अथवा अन्य साक्ष्य की बार-बार मांग करना कहीं न कहीं अपने देश की सेना का अपमान और भारतभूमि के अपमान का परिचायक है। अपनी सेना के सामर्थ्य का हौसला-अफजायी की बजाय उन पर शक करना, उनके खिलाफ बयानबाजियां देना निश्चित तौर पर दुश्मनी ताकत को बढ़ावा देने की स्वार्थपूर्ण कोशिश है। यह अलग बात है कि सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानियों में ऐसे चंद ही लोग हैं, जो उक्त मुद्दे पर अनर्गल प्रलाप करने में लगे रहे, जिससे देश का कुछ भी बाल-बांका नहीं होने वाला, लेकिन उनकी विचारधारा, उनकी ओछी राजनीति जब राष्ट्रीय सुरक्षा को दरकिनार करने लग जाय तो इसे बेहद शर्मनाक व दुर्भाग्यपूर्ण ही माना जायेगा। अब जब सर्जिकल स्ट्राइक के दो साल बाद सेना ने पूरी कार्रवाई का वीडियो जारी किया तो न केवल पाकिस्तान के पसीने छूट रहे हैं, बल्कि पाकपरस्त तथाकथित कई हिन्दुस्तानी नेताओं को भी आइना दिख गया है। पाकिस्तान की ओर से उरी पर 18 सितंबर को हमले के 11वें दिन बाद सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया गया, जिसमें भारतीय सेना ने रॉकेट लॉन्चर, मिसाइलों और छोटे हथियारों से हमला किया था। आपको बता दें कि 29 सितंबर 2016 को भारतीय सेना ने पाकिस्तान की सीमा में तीन किलोमीटर भीतर जाकर इस सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया था। दो दर्जन से ज्यादा आतंकियों सहित दो पाकिस्तानी सैनिक भी मारे गए थे। बता दें कि सेना की उक्त कार्रवाई के बाद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सेना की कार्रवाई की तारीफ की तो की थी, लेकिन इशारों-इशारों में इसके सबूत भी मांग लिए थे। उसके बाद तो विपक्ष के अन्य नेताओं के भी सुर इससे मिलने लगे। उनका कहना है कि भाजपा सर्जिकल स्ट्राइक की आड़ में राजनीतिक रोटियां सेंक रही है। वहीं सत्तासीन भाजपा विपक्ष पर सेना की तौहिन का आरोप लगा रही है। जो सेना दिन-रात अपना सर्वस्व न्योछावर कर देश की सेवा में समर्पित रहती है, उसके प्रति आस्था में अविश्वास कहीं न कहीं दुःखद जरूर है। ऐसे में यह संदेह गलत नहीं कि जब कभी युद्ध के हालात बने तो ऐसे लोग दुश्मन देश के साथ ही खड़े न हो जायें। ऐसे लोगों को लादेन के खिलाफ अमेरिकी कार्रवाई सहित इस तरह के अन्य देशों की कार्रवाइयों से सबक लेने की जरूरत है, जहां के लोगों ने अपने देश का साथ दिया और कभी सबूत नहीं मांगे। बहरहाल, आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्रीय मूल्यों व राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ कोई भी सियासत न हो। इसमें सत्ता पक्ष, विपक्ष के साथ-साथ पूरे देश को एक साथ सेना के साथ खड़ा होकर उनका हौसला बढ़ाना चाहिये। राजनीति करने के लिये बहुत सी चीजें पड़ी हैं। देश रहेगा, तो सब कुछ रहेगा। कितने ही बलिदानों से यह भारतभूमि आजाद हुई और अपनी मातृभूमि की सुरक्षा में साथ निभाकर ही हम उन शहादतों का सम्मान कर सकते हैं।

## हिन्दी कविता

# आहां कहब त'...



आहां कहब तं गीत लिखब हम,  
ठोरपरक संगीत लिखब हम।  
पढ़ि ली जं नैनक भाषा  
नवल प्रीतक रीति लिखब हम॥

आहां कही त' आस लिखब हम,  
श्वास मे बसल विश्वास लिखब हम।  
पढ़ि ली जं आहा मोनक भाषा  
तृषित हृदयक प्यास लिखब हम॥

आहां कही तं प्रेम लिखब हम,  
दू हृदयक हार लिखब हम।  
पढ़ि ली जं तन कें भाषा  
नैनक अभिसार लिखब हम॥

आहां कही तं अर्पण कऽ दी,  
प्रेम हृदयक आहां कें पूरा।  
श्वांस-प्रश्वांस अभिर्मंत्रित कऽ दी  
पोर-पोर चानन सम मोरा॥

- मैथिल विनय, बोकारो।





# दिशाहीन हुई 'दिशा', विकास को लेकर गंभीर नहीं अधिकारी

**मोबाइल और खैनी बनाने में रहते हैं व्यस्त**



**संवाददाता**  
**बोकारो :** बोकारो जिले के विकास को लेकर यहां के अधिकारी कितने संजीदा हैं, इसकी बागनी एक बार फिर सामने आयी है। मौका था गत दिनों जिला समाहरणालय के सभाकक्ष में आयोजित जिलास्तरीय विकास कार्यान्वयन एवं समन्वय समिति (दिशा) की बैठक का। गिरिडीह सांसद सह समिति अध्यक्ष रवीन्द्र कुमार पांडेय की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में एक तरफ जहां विभिन्न महत्वपूर्ण योजनाओं के क्रियान्वयन तथा जनसमस्याओं को लेकर चर्चा चलती रही, वहीं दूसरी तरफ अधिकारी अपनी-अपनी धुन में रमे रहे। दूसरे शब्दों में कहें तो दिशा की बैठक दिशाहीन नजर आयी। कई अधिकारी तो बैठक के दौरान झपकियां लेते देखे गये। जो

जगे मिले, उनमें से अधिकांश मोबाइल पर व्हाट्सएप, फेसबुक के पोस्ट्स देखने में मशगूल रहे। हद तो तब हो गयी, जब कुछ पदाधिकारियों को खैनी रगड़ते, बनाते व खाते पाया गया। साहब अपने प्रयास से तो छुपकर ये काम करते रहे, लेकिन मीडियाकर्मियों की नजर से भला कैसे बच पाते, सो हुआ। अधिकारियों की इसी शिथिलता का नजीता है कि बार-बार इस तरह की बैठकें पर बैठकें होती रहती हैं, लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकल पाता और समस्यायें धरी की धरी ही रह जाती हैं। बैठक में स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल, पुल-पुलिया और सड़क से लेकर बिजली की व्यवस्था पर चर्चा हुई, ताकि इनसे संबंधित जन-समस्याओं का समाधान हो सके, लेकिन जब अफसर ही गंभीर नहीं रहेंगे तो

**कर्तव्य के प्रति संवेदनशील बनें अधिकारी : सांसद**

जिला स्तरीय विकास कार्यान्वयन एवं समन्वय समिति 'दिशा' की बैठक की अध्यक्षता कर रहे सांसद सह समिति अध्यक्ष रविन्द्र कुमार पाण्डेय ने पदाधिकारियों की कार्यशैली पर नाराजगी जाहिर की तथा पदाधिकारियों को निर्देश दिया कि वे अपने-अपने विभागों के कार्यों में संवेदनशीलता दिखाते हुए योजनाओं का क्रियान्वयन समय और सही तरीके से करें, ताकि जनता का अधिक से अधिक कल्याण हो सके। श्री पाण्डेय ने कार्यपालक अभियंता ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल को निर्देश दिया कि प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के सभी सड़कों की सूची विधानसभावार माननीय विधानसभा सदस्यों को उपलब्ध करायें तथा सड़क के पूर्ण होने के पांच वर्षों तक एजेंसी के द्वारा सड़क मेन्टेनेंस का कार्य किया गया है या नहीं की भी जानकारी दें। उन्होंने भूमि संरक्षण पदाधिकारी को 2824 डोभा के द्वितीय किस्त के भुगतान को एक महीने के अंदर कराना सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। बोकारो विधायक बिरंची नारायण ने कार्यपालक अभियंता विद्युत प्रमण्डल (चास) से चेचकाधाम में पोल गिराये जाने के बावजूद तार नहीं लगाने को लेकर कारण पूछा। दिशा अध्यक्ष ने कार्यपालक अभियंता विद्युत प्रमण्डल चास को 31 जुलाई तक कार्य पूरा कर विद्युत आपूर्ति करने का निर्देश दिया। उन्होंने अगली बैठक में महाप्रबंधक विद्युत को भी शामिल कराने का निर्देश कार्यपालक अभियंता विद्युत को दिया। डुमरी विधायक जगरनाथ महतो ने वित्तीय वर्ष 2005-06 में स्वीकृत नावाडीह सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के अब तक नहीं बनने पर सवाल खड़े किये। इस पर 'दिशा' अध्यक्ष ने उपविकास आयुक्त को उक्त मामले में पूरी संचिका मंगाकर बिन्दुवार रिपोर्ट तैयार करने तथा स्वास्थ्य केन्द्र निर्माण कार्य में दोषी व्यक्तियों को चिन्हित कर कार्रवाई हेतु सूचीबद्ध करने का निर्देश दिया। विधायक डुमरी के द्वारा कमलडीह में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत गैस कनेक्शन में राशि लिये जाने की शिकायत पर दिशा अध्यक्ष ने जिला आपूर्ति पदाधिकारी को गैस एजेंसी पर कार्रवाई करने का निर्देश दिया।



क्या परिणाम होगा, इसका सहज अंदाजा लगाया जा सकता है। बैठक में सांसद रवीन्द्र पाण्डेय के साथ-साथ झामुमो के डुमरी विधायक जगरनाथ महतो, बेरमो विधायक बाटुल महतो, बोकारो विधायक बिरंची नारायण, गोमिया से जेएमएम विधायक के प्रतिनिधि के तौर पर विधायक बबीता देवी के पति सह पूर्व विधायक योगेश महतो शामिल हुए। वहीं प्रशासन की

तरफ से डीडीसी रविरंजन मिश्रा के साथ विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। बैठक काफी हंगामेदार रही। योजनाओं का काम पूरा नहीं होने पर डुमरी विधायक जगरनाथ महतो जहां भड़क कर उठकर विदा होने लगे तो पूर्व विधायक योगेश महतो की सदन में मौजूदगी पर कई लोगों ने सवाल खड़े किये। योगेश बैठक में बतौर विधायक

प्रतिनिधि शामिल हुए थे। बाद में जब योगेश ने गोमिया विधायक और अपनी पत्नी बबीता देवी का प्राधिकार-पत्र दिखाया, तब जाकर मामला शान्त हुआ। विदित हो कि कोयला चोरी मामले में योगेश महतो की सदस्यता रद्द होने के बाद हाल ही में संपन्न हुए गोमिया उपचुनाव के बाद उनकी पत्नी बबीता देवी विधायक के पद पर काबिज हुई।

## टेलर मास्टर का बेटा बना दारोगा

**बधाई देने वालों की लगी कतार**

**संवाददाता**  
**चंद्रपुरा :** चंद्रपुरा नेताजी मार्केट के रेक्स टेलर्स के संचालक मो. मुस्तकिम के पुत्र मो. नौशाद ने झारखंड कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित दारोगा नियुक्ति प्रतियोगिता में सफलता पायी है। नौशाद ने इंजीनियरिंग में बी.टेक. किया है और फिलहाल भोपाल स्थित एक कंपनी में सहायक प्रबंधक के रूप में कार्यरत है। नौशाद ने दसवीं की पढ़ाई डिनोबिली, 12वीं की केंद्रीय विद्यालय, चंद्रपुरा एवं बीटेक. की पढ़ाई रांची (नीट) से पूरी की है। नौशाद की सफलता पर प्रधानमंत्री जनकल्याणकारी योजना के प्रदेश अध्यक्ष अतानु चौधरी एवं नेताजी मार्केट के दुकानदार प्रदीप कुमार, अरूण जायसवाल, प्रेम अग्रवाल, मो वाहिद, जाकिर हुसैन आदि ने बधाई दी है।



## विद्यालय मंदिर, विद्यार्थी भगवान : संयुक्तानंद सरस्वती

**संवाददाता**  
**बोकारो :** चिन्मय मिशन के गुरुदेव स्वामी तेजोमयानंदजी का जन्म-दिन स्थानीय चिन्मय विद्यालय में धूमधाम से मनाया गया। अलग-अलग सत्रों में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गये, जिनमें बच्चों ने भजन व नृत्य की मनोहारी प्रस्तुति की। एक अन्य सत्र में स्वामिनी स्वामिनी संयुक्तानंद सरस्वती ने विद्यालय के स्वामी तेजोमयानंद सभागार में बच्चों, अभिभावकों व शिक्षक-शिक्षिकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि गुरु श्रेष्ठ व सर्वोपरि है। हमारे गुरुजी का ज्ञान, उनकी पवित्रता, उनका मार्गदर्शन तथा शांत, सदाचारी व मिलनसार स्वभाव अपने-आप में अद्वितीय है। स्वामिनीजी ने कहा कि विद्यालय मंदिर है। छात्र भगवान हैं। गुरु एक छात्र के माध्यम से समाज में परिवर्तन, ज्ञान, विकास व विश्वास का नींव रखता है। ज्ञान दान जीवन का सबसे बड़ा दान है। गुरुजन ज्ञान के माध्यम से नित्य विकास की नई परिभाषा लिखते हैं। उन्होंने अंत में अपने आशीर्वाचन में कहा- स्वामी तेजोमयानंदजी हमेशा कहा करते हैं कि गुरु वही सफल है, जो अपने छात्रों में संस्कार, संस्कृति व शिक्षा की ज्योति जगाए। कार्यक्रम में विद्यालय अध्यक्ष सह चिन्मय मिशन के क्षेत्रीय निदेशक बी. मुखोपाध्याय, विद्यालय सचिव महेश त्रिपाठी, प्राचार्य डा. अशोक सिंह, उपप्राचार्य अशोक कुमार झा, बच्चे, अभिभावक, विद्यालय के शिक्षक-शिक्षकेतरगण सहित सैकड़ों श्रद्धालुगण उपस्थित थे।



## खतरे में उपमहापौर की 'कुर्सी'?



**विजय आनंद सिन्हा**  
**चास :** चास नगर निगम के उपमहापौर (डिप्टी मेयर) की कुर्सी की कोई गरिमा नहीं रह गयी है। जब जिसे मन होता है, उसे उनकी चेयर पर बैठा दिया जाता है। अपनी कुर्सी के साथ इस छेड़छाड़ को लेकर डिप्टी मेयर अविनाश कुमार काफी खफा और आक्रोशित हैं। उन्हें अपनी कुर्सी खतरे में लग रही है। उन्होंने कहा कि नगर निगम को कुछ लोगों ने अपनी जागीर समझ रखी है। इसे लिमिटेड कंपनी बनाने का पूरा प्रयास किया जा रहा है। उनकी कुर्सी के साथ हमेशा से ही खिलवाड़ किया जाता रहा है। हरेक कुर्सी की अपनी एक मर्यादा होती है। जिस पदाधिकारी की कुर्सी होती है, उस पर उसे ही बैठना चाहिए, लेकिन यहां ऐसा नहीं होता। निगम में उन्हें शुरू से ही इस प्रकार अपमानित किया जाता रहा है, जिसका वह विरोध करते हैं और जब तक यह सिलसिला चलेगा, उनका विरोध जारी रहेगा। दरअसल, अविनाश का यह आक्रोश पिछले दिनों उस वक्त भड़क उठा, जब निगम के संवाददाता सम्मेलन में उनकी कुर्सी पर किसी और ने कब्जा जमा लिया। अविनाश प्रेसवार्ता में थोड़े विलंब से पहुंचे तो उन्होंने अपनी कुर्सी पर कथित तौर पर चास नगर निगम के एक अधोषित ब्रांड एंबेसडर रोहित झा को बैठा पाया। अपने लिए कुर्सी की कमी देख वह एक किनारे जाकर बैठ गये, लेकिन उनका आक्रोश धीरे-धीरे

सुलगता रहा और औपचारिक प्रेसवार्ता के खत्म होते ही मीडियाकर्मियों के सामने ही वह आग-बबूला हो उठे। मेयर के जाने के बाद उन्होंने कार्यपालक पदाधिकारी जेपी यादव सहित अन्य अधिकारियों पर जमकर गुस्सा झाड़ा। उन्होंने कहा कि जब उन्होंने 10 मिनट विलम्ब से वहां पहुंचने की बात बता दी थी तो उनके आने का इंतजार क्यों नहीं किया गया? वैसे भी निगम में हरेक कार्यक्रम निर्धारित समय से विलम्ब से होता रहा है तो प्रेसवार्ता में थोड़ा इंतजार क्यों नहीं किया गया? और तो और, उनकी कुर्सी पर भला किसी दूसरे-तीसरे शख्स को क्यों बैठा दिया गया? उन्होंने निगम में मात्र एक ब्रांड एंबेसडर ही अधिकृत बताते हुए इस मुद्दे पर भी अपनी खिझ दिखायी। मीडियाकर्मियों से वार्ता में उन्होंने चास नगर निगम को नरक निगम का दर्जा दे दिया। हो रहा है।

**अगली बार आर्येंगे टॉप- 5 में : मेयर**

चास नगर निगम के मेयर भोलू पासवान ने प्रेसवार्ता में कहा कि चास नगर निगम ने स्वच्छता सर्वेक्षण-2018 में पूरे देश में जो 19वां स्थान तथा पूरे झारखंड में पहला स्थान प्राप्त किया, वह सभी के समेकित प्रयास का ही परिणाम है। यह उपलब्धि चास नगर निगम के सभी पदाधिकारी, पार्षदों व तमाम सदस्यों के साथ-साथ समस्त चासवासियों की मदद की देन है। सभी निगमकर्मियों व सफाई कर्मचारियों ने दिन-रात मेहनत की है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2019 के स्वच्छता सर्वेक्षण में देश के टॉप पांच शहरों में चास को शुमार करने का पूरा प्रयास किया जायेगा। इस दिशा में काम चल रहा है। कुछ कमियां रह गयीं, जिन्हें जल्द ही दूर कर लिया जायेगा। कचरा निस्तारण संयंत्र जल्द ही पुनर्नकी में लग जायेगा। जल्द ही भोलूर बांध का सौदर्यीकरण भी किया जायेगा। प्रेसवार्ता में सिटी मैनेजर शम्बीर आलम, हिमांशु मिश्रा, शंकर सिन्हा, आदित्य कुमार सहित सभी निगमकर्मियों उपस्थित थे।



## विस्थापन व पुनर्वास की समस्या सलटाने में जुटा प्रशासन

**संवाददाता**  
**बोकारो :** उपायुक्त मृत्युंजय कुमार बरगवाल ने विस्थापन एवं पुनर्वास की समस्याओं को लेकर अनुमण्डल कार्यालय, तेनुघाट में बैठक का आयोजन जिला प्रशासन, सीसीएल के प्रबंधकों एवं स्थानीय ग्रामीणों के साथ किया गया। उपायुक्त ने सभी



सीसीएल के प्रबंधकों से कहा कि जितने भी स्थानीय लोगों को विस्थापित किया गया है, उनका सत्यापन करारकर विस्थापन प्रमाण पत्र एक सप्ताह के अंदर उपलब्ध कराना सुनिश्चित करायें, ताकि स्थानीय स्तर पर उनका जाति, आवासीय एवं आय प्रमाण पत्र बन सके। उन्होंने कहा कि सभी ग्रामीण विस्थापन एवं पुनर्वास से संबंधित जितने भी मामले हैं, उन्हें आवेदन के रूप में अनुमण्डल पदाधिकारी बेरमो तेनुघाट को एक सप्ताह के अंदर देना सुनिश्चित करें, ताकि जिला प्रशासन की ओर से अग्रेतर कार्रवाई की जा सके। उन्होंने सीसीएल क्षेत्र में अवैध रूप से कब्जा कर रहे लोगों को भी सीसीएल प्रबंधन के सहयोग से कब्जा-मुक्त करने का निर्देश अनुमण्डल पदाधिकारी को दिया। उपायुक्त ने कारो, बैदकारो, बड़वाबेड़ा, ढोरी क्षेत्र, अमले के पुनाटांड बांधटोला, बोकारो माईन्स, कथारा के बांध बस्ती आदि की समस्याओं पर चर्चा करते हुए सीसीएल प्रबंधन को विस्थापितों को प्रावधान के अनुसार पुनर्वासित करने का निर्देश दिया। उन्होंने विस्थापितों की समस्याओं को एक महीने के अंदर समाधान कर यथासंभव कम करने का निर्देश दिया। बैठक के दौरान डुमरी विधायक जगरनाथ महतो, पूर्व मंत्री लालचंद महतो, अपर समाहर्ता जुगनू मिंज, अनुमण्डल पदाधिकारी, बेरमो प्रेमरंजन, भूमि सुधार उप समाहर्ता जेम्स सुरीन, प्रखण्ड प्रमुख चन्द्रपुरा, बेरमो एवं गोमिया, अंचल अधिकारी चन्द्रपुरा, बेरमो, गोमिया, नावाडीह एवं कसमार, सीसीएल प्रबंधक ढोरी, कथारा, बी एण्ड के, रजपुरा ब्लॉक टू सहित कई विस्थापित ग्रामीण उपस्थित थे।





## बिना लाइन में लगे अब पाइये जेनरल टिकट



### यात्री-सुविधाओं के प्रति रेलवे तत्पर : डीआरएम

#### कार्यालय संवाददाता

**बोकारो :** बोकारो एवं आसपास के निवासियों सहित आद्रा मंडल के रेल यात्रियों के लिए एक अच्छी खबर है। रेल सुविधाओं में तकनीक के इस्तेमाल से अब एक और सहूलियत होने जा रही है। पहले जिस तरह लोग आईआरसीटीसी सहित अन्य निजी मोबाइल ऐप के जरिए रेलवे का आरक्षित टिकट बुक कराते रहे, अब उसी तरह अनारक्षित टिकटों की बुकिंग भी मोबाइल ऐप के माध्यम से संभव हो सकेगी। जनरल टिकटों की बुकिंग बिना कतार में लगे हुए मोबाइल के माध्यम से यात्री करा सकते हैं। यूटीएस नामक इस मोबाइल ऐप के माध्यम से जनरल एवं लोकल टिकट के साथ-साथ प्लेटफार्म टिकट भी आसानी से कटाये जा सकते हैं। इंडियन रेलवे के इस ऐप का उपयोग दक्षिण पूर्व रेलवे के यात्री इसी हफ्ते से करने लग जायेंगे, जिसे लांच करने की तैयारी जोरों पर चल रही है। उक्त आशय की जानकारी आद्रा मंडल के डीआरएम शरद कुमार श्रीवास्तव ने बोकारो स्टील सिटी रेलवे स्टेशन पर एक प्रेसवार्ता में दी। उन्होंने बताया कि यात्री-सुविधाओं के मद्देनजर रेलवे का यह एक महत्वपूर्ण कदम है। रेलवे यात्री सुविधाओं को लेकर सदैव तत्पर है। इसी के तहत पहल की जा रही है। एंड्रायड, विंडोज

अथवा आई आधारित स्मार्टफोन में इसे स्टोर से आसानी से इंस्टाल कर पंजीकरण की प्रक्रिया पूरी करने के बाद उपयोग में लाया जा सकता है। इसके जरिए पेपरलेस टिकट की बुकिंग कराई जा सकती है। अपने मोबाइल वॉलेट को जोड़कर अथवा ई-पेमेंट सुविधाओं के प्रयोग से टिकट के एक्ज में भुगतान किया जा सकता है और जो टिकट निर्मित होगा उसे टीटीई के आने पर दिखाया जा सकता है। यह ऐप विंडोज और आई ओएस पर भी उपलब्ध है। उन्होंने बताया कि दूरे के आद्रा मंडल में पहले इसकी लांचिंग

की जा रही है। इसके बाद सभी चारों जोन में लांच कर दिया जायेगा।

डीआरएम ने बोकारो स्टील सिटी स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या- 3 का विस्तारीकरण जल्द किये जाने, स्टेशन पर बिजली समस्या के लिये उच्च क्षमता वाला जेनरेटर लगाने, लिफ्ट सुविधा को भी बहुत जल्द दुरुस्त करने तथा स्टेशन परिसर में सुविधायुक्त पार्किंग की व्यवस्था भी उन्होंने शीघ्र प्रारंभ किए जाने की बात कही। एक अन्य सवाल के जवाब में उन्होंने रेलवे स्टेशन परिसर में वाहनों से जबरन अवैध वसूली रोकने को लेकर रेलवे सुरक्षा बल के साथ विशेष अभियान चलाकर कार्रवाई का अश्वासन दिया। उन्होंने स्टेशनों पर होने वाले आंदोलनों को लेकर नाराजगी व्यक्त की तथा कहा कि इससे रेलवे के साथ-साथ यात्रियों को भी भारी नुकसान झेलना पड़ता है। प्रेसवार्ता में डीआरएम के साथ मुख्य रूप से सीनियर डीईएन हरसिमरन सिंह, सीनियर डीओएम राजेश कुमार, सीनियर डीसीएम एके चौधरी, सीएमएस, आद्रा केबी साहा, जनसंपर्क पदाधिकारी अभिनव भट्टाचार्य आदि उपस्थित थे।

### विस्तारीकरण के नाम पर गरीबों को न उजाड़ने की मांग

**बोकारो :** नगर विकास समिति के अध्यक्ष अभय कुमार मुन्ना के साथ स्टेशन रोड कुर्मीडीह का एक प्रतिनिधिमंडल आद्रा मंडल के डीआरएम शरद कुमार श्रीवास्तव से मिला। अभय कुमार मुन्ना ने डीआरएम शरद कुमार श्रीवास्तव को बताया कि कुर्मीडीह में विगत 30-35 वर्षों से छोटे-मोटे रोजगार करके सैकड़ों लोग अपने परिवार का भरण-पोषण कर रहे हैं। इधर, कुछ दिनों से रेलवे अपने बिजली आफिस विस्तारीकरण के नाम पर सैकड़ों लोगों को उजाड़ने की साजिश कर रहा है। इस मामले को गंभीरता से लेते हुए सांसद पीएन.सिंह ने मंडल रेल प्रबंधक दक्षिण पूर्व रेलवे आद्रा को फोन करके और पत्र देकर कहा कि जब रेलवे के पास सैकड़ों एकड़ परती जमीन खाली पड़ी है तो फिर विस्तारीकरण के नाम पर वर्षों से झोपड़ी बनाकर रहनेवालों को उजाड़ना ठीक नहीं है। इस पर रेल प्रबंधक, आद्रा ने तुरन्त रोक लगाते हुए किसी को भी अतिक्रमण नहीं करने की बात कही। प्रतिनिधिमण्डल में धनबाद सांसद कार्यालय प्रभारी एकेवर्मा, निराला शर्मा, अजीत शर्मा, श्रीनिवास शर्मा, बलराम राय, निर्मल साह, सोहन लाल, घनश्याम साह, श्यामदेव सिंह, दिनेश सिंह, संतोष पांडेय आदि शामिल थे।

## हादसों को आमंत्रित कर रहे खांजो पुल के किनारे के कीचड़



#### संवाददाता

**बेरमो (बोकारो) :** जिले के पेटरवार प्रखंड अंतर्गत अंगवाली उत्तरी स्थित खांजो नदी पर करोड़ों रुपये की लागत से निर्मित पुल के दोनों छोर पर संपर्क-पथ निर्माण-स्थल पर गिरायी गयी मिट्टी इन दिनों काफी खतरनाक हो चुकी

है। लाल मिट्टी बारिश के कारण कीचड़ में तब्दील हो गयी है। इसके कारण आवागमन में लोगों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। खासकर, साईकिल व दोपहिया वाहन चालकों को उतरकर किनारे पर चल के पार होना पड़ रहा है। बिना गार्डवाल के मिट्टी गिरायी

गयी है और किनारे से फिसलन भरी राह से राहगीर खतरनाक तरीके से आवाजाही करने को विवश हैं। पुल में खेदो साइड में ठेकेदार द्वारा गार्डवाल तो बनाया गया, परंतु अंगवाली की ओर नहीं।

उल्लेखनीय है कि उक्त पुल का निर्माण अंगवाली सहित पिछरी पंचायत के खेदो गांव से होते हुए कम समय में पुल से पार कर बेरमो अनुमंडल जाने के लिए किया गया था। गिरिडीह सांसद व बेरमो विधायक की अनुशंसा पर इस पुल का निर्माण करवाया गया था। कई ग्रामीणों ने बताया कि कुछ दिन ही बीते हैं कि खांजो नदी का यह नवनिर्मित पुल पहली बारिश में ही खतरनाक हो गया था। इसका किनारा बह गया था। ठेकेदार द्वारा फिर से मिट्टी डाली गयी, परंतु गार्डवाल नहीं बनाया गया, जिसके कारण ग्रामीण भुक्तभोगी हो रहे हैं। सूत्रों की मानें तो गांव के दो भाजपा नेता एवं चलकरी के एक भाजपा नेता की देख-रेख में पुल का निर्माण किया गया है। पुल का कार्य अभी भी अपूर्ण है।

## चोरों का सेफ-जोन बना सिटी थाना इलाका



#### संवाददाता

**बोकारो :** बोकारो इस्पात नगर में सिटी थाना क्षेत्र चोर, उचककों, बदमाशों और लुटरो के लिए सेफ जोन बन चुका है। पिछले कई माह से यहां चोरों का उत्पात लगातार जारी है, परंतु इस पर लगातार लगाने में पुलिस पूरी तरह से विफल साबित हो रही है। दूसरे शब्दों में कहें तो पुलिस नाम की चीज ही नहीं रह गई है। आम लोगों का यही कहना है कि पुलिस हेलमेट चेकिंग के नाम पर आम लोगों को दिन-रात परेशान करने में लगी रहती है और अपराधी दिनदहाड़े हथियारों से लैस होकर वारदातों को अंजाम दे चलते बने हैं। हाल के दिनों में सिटी थाना क्षेत्र में चोरी छिनतई आदि की कई वारदातों सामने आयी और दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि पुलिस अब तक इनमें से किसी एक का भी सुराग पता कर पाने में नाकाम रही है। इसके कारण स्वाभाविक तौर पर यहां की विधि-व्यवस्था और पुलिस प्रशासन के प्रति आमलोगों में रोष बढ़ता जा रहा है। थाना प्रभारी से लेकर एसपी और डीआईजी तक यह दावा करते हैं कि बढ़ती चोरियों पर बहुत जल्दी कमी आएगी,

लेकिन ऐसा होता दिख नहीं रहा। आलम यह है कि घंटा, दो घंटा के लिए भी अगर आप घर बंद कर परिवार के साथ किसी पार्टी, किसी फंक्शन या किसी जरूरी काम के लिए जाते हैं तो यह आपके लिए काफी खतरनाक साबित हो सकता है। चंद घंटों में ही चोर आपको उम्र भर की गाढ़ी कमाई पर हाथ फेरकर आपको सड़क पर ला सकते हैं। हाल के दिनों में सिटी थाना क्षेत्र में ऐसी कई घटनाएं सामने आई हैं। रात के अंधेरे में चोर आराम से चंद घंटों में लाखों की संपत्ति समेट कर चलते बने हैं और पुलिस घटना के कई दिनों बाद तक भी महज हाथ मलती रह जाती है। हालिया शिकार बने बोकारो के पूर्व सिविल सर्जन डा. मिथिलेश कुमार। को-आपरेटिव कॉलोनी में प्लाट संख्या- 144 निवासी डा. मिथिलेश अपनी पत्नी के साथ जोधाडीह मोड़ स्थित अपने क्लिनिक चले गए थे। वहां से दो घंटे बाद घर लौटते तो जरूर, लेकिन इसी अवधि में चोर उनके यहां 28 लाख रुपये मूल्य की संपत्ति पर हाथ फेर चुके थे। पुश्तैनी जेबरात सहित उनकी पत्नी व बहू के गहने तथा पांच से आठ लाख रुपये नकद चोर ले गये। घटना पर आईएमए ने भी रोष जताया तथा प्रशासन से बढ़ती चोरियों पर रोक लगाने की मांग की।

इसके पूर्व 29 जून को सिटी थाना क्षेत्र के सेक्टर-3बी/108 के नीचे खड़ी एक कार का शीशा तोड़कर हजारों रुपए की चोरी, 7 जून को सेक्टर 3बी/370 निवासी बैंककर्मि अनुज झा के घर लाखों की चोरी, 6 जून को सेक्टर 3सी में ब्रॉटर नंबर 196 निवासी जय मंगल सिंह के घर चोरी, सेक्टर 3सी में ही ब्रॉटर नंबर 275 निवासी जेके सिंह के आउट हाउस में लाखों की चोरी, 15 मई को सिटी थाना इलाके के सेक्टर-3ए/638 निवासी परशुराम राय तथा 3डी/651 निवासी ठेकेदार दीपक कुमार के घर दिन-दहाड़े लाखों की चोरी एवं सेक्टर 2सी के आवास संख्या 4- 281 निवासी सुधीर कुमार के घर 10 लाख रुपए मूल्य की चोरी के मामलों में भी पुलिस को अब तक कोई अहम सफलता हाथ नहीं लग सकी है।

### हफ्ते की हलचल

### मंत्री के अनुज के विवाहोत्सव में शरीक हुई राज्यपाल



**चंदनकियारी :** राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू झारखंड सरकार के मंत्री अमर कुमार बाउरी के छोटे भाई प्रताप कुमार बाउरी के शादी समारोह में शामिल हुईं। राज्यपाल ने वर-वधू को आशीर्वाद देते हुए नये दाम्पत्य जीवन की शुभकामनाएं दीं। राज्यपाल का स्वागत मंत्री श्री बाउरी ने स्वयं किया तथा उनकी आगवानी करते हुए अपने आवास तक ले गए एवं वर-वधू से मिलाया। साथ ही उन्होंने अपने परिवार के सभी सदस्यों से भी राज्यपाल का परिचय कराया। राज्यपाल की सुरक्षा में प्रशासन मुस्तैद रहा तथा सुरक्षा चाक-चौबंद रही। इसके पूर्व राज्यपाल को चंद्रा उच्च विद्यालय स्थित हेलीपैड में गार्ड आफ आनर दिया गया। मौके पर उपायुक्त मृत्युंजय कुमार बरणवाल, पुलिस अधीक्षक कार्तिक एस., अपर समाहर्ता जुगनू मिंज, डीपीएलआर एसएन उपाध्याय, अनुमण्डल पदाधिकारी सतीश चन्द्रा, सिविल सर्जन डा. सोबान मुर्मू, अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी महेश प्रसाद सिंह, पुलिस उपाधीक्षक (सीसीआर) रजतमणि बाखला, नगर पुलिस उपाधीक्षक अजय कुमार, जिला आपूर्ति पदाधिकारी नीरज कुमार सिंह, जिला जनसम्पर्क पदाधिकारी विकास कुमार हेम्ब्रम सहित आदि मौजूद थे।

### बीएसएल से सेवानिवृत्त कर्मचारियों की विदाई

**बोकारो :** बोकारो स्टील प्लांट से जून 2018 माह में सेवानिवृत्त होने वाले कर्मियों के लिये को मानव संसाधन विकास केन्द्र के प्रेक्षागृह में एक विदाई समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि महाप्रबंधक (कोक अवन एवं बीपीपी) बीके तिवारी ने सेवानिवृत्त कर्मियों को उनकी निष्ठापूर्ण सेवा के लिये बधाई देते हुए उनके सुखमय जीवन की कामना की। उन्होंने उन्हें सेवा प्रमाण पत्र तथा उपहार भी भेंट किये। इसके पूर्व सहायक महाप्रबंधक (कार्मिक-सेवाएं एवं अंतिम निपटारा प्रकोष्ठ) यूके पोरूआ ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया। सहायक प्रबंधक दीप्ति सिंह ने



सेवानिवृत्त हो रहे कर्मियों को अंतिम निपटारा संबंधी जानकारी दी और प्रत्येक सेवानिवृत्त हो रहे कर्मि का बॉयोडाटा प्रस्तुत किया। उपप्रबंधक (कार्मिक-मैत्री भवन) सुरेंद्र उपाध्याय ने मैत्री भवन से संबंधित जानकारी दी और एमडी इंडिया टीपीए के प्रतिनिधि ने मेडिकल से संबंधित जानकारी उपलब्ध करायी। वहीं, महाप्रबंधक व इससे ऊपर के स्तर के अधिकारियों के लिए सीईओ सम्मेलन कक्ष में अलग से आयोजित किए गए एक विदाई समारोह में महाप्रबंधक (ऑलटी) डी चटर्जी, महाप्रबंधक (आरएमपी) मनोज सिंह तथा निदेशक (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं) डॉ. रीता हांसदा को विदाई दी गयी। सीईओ पीके सिंह ने इन्हें उपहार भेंटकर शुभेच्छाओं सहित विदाई दी। उन्हें प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह और अंतिम निपटारे से जुड़े दस्तावेज भेंट किए और उनके भावी जीवन के लिए शुभकामनाएं दीं। मौके पर अधिशासी निदेशकगण समेत संयंत्र के अन्य वरीय अधिकारी भी मौजूद थे।

### सीटीपीएस में सेवानिवृत्त डीवीसीकर्मियों को भावभीनी विदाई



**चंद्रपुरा :** डीवीसी की इकाई चंद्रपुरा ताप विद्युत केन्द्र (सीटीपीएस) में चार डीवीसीकर्मि सेवानिवृत्त हो गये, जिन्हें समारोहपूर्वक भावभीनी विदाई दी गयी। मानव संसाधन विभाग द्वारा आयोजित अभिनन्दन समारोह में मुख्य अभियंता सह परियोजना प्रधान गौतम कुमार चंदा और मुख्य अभियंता आसीम नन्दी द्वारा सेवानिवृत्त कर्मचारियों को उनके सम्मान में उपहार भेंट किये गये। सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता प्रथम (औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान) समप्रीति कुमार हाईत और डीवीसीकर्मि गुरुमेल सिंह, बाबूलाल मांझी तथा मणि गोप को डीवीसी की ओर सम्मानित किया गया। अपने संबोधन में मुख्य अभियंता सह परियोजना प्रधान गौतम कुमार चंदा ने कहा कि डीवीसी को कर्मियों ने ही शोष पर पहुंचाया है। सेवानिवृत्तकर्मियों से हमें काफी कुछ सीखने को मिला है। इसके लिए हम इनका ऋणी रहेंगे। मौके पर मुख्य अभियंता आसीम नन्दी, आरपीके सिन्हा, अपर निदेशक सुबोध मिश्रा, संयुक्त निदेशक नीरज सिन्हा, सहायक निदेशक तनीषा सिल्वी, कार्यपालक अभियंता (असेनिक) विनय कुमार उपाध्याय, मनोज झा, मोहम्मद मोईन, सुभाष दुबे आदि ने भी संबोधित किया। संचालन शिक्षक रामजी रजक ने किया।

### आईए में एसएल आर्य इंटर कॉलेज का उम्दा प्रदर्शन

**तुपकाडीह :** झारखंड अधिविद्य परिषद (जैक) द्वारा आयोजित इंटरमीडिएट (कला) की परीक्षा में स्थानीय एसएल आर्य इंटर कॉलेज, तुपकाडीह के छात्र-छात्राओं ने शानदार प्रदर्शन किया। महाविद्यालय के प्राचार्य डा. सीके ठाकुर ने बताया कि उनके कॉलेज में लगभग 100 से अधिक बच्चों ने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्णता हासिल की। उन्होंने कहा कि जिन छात्रों ने राज्य एवं जिला में अपना उम्दा स्थान बनाया है, उन्हें महाविद्यालय की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। जिन छात्र-छात्राओ ने वर्ष 2018 के रिजल्ट में सफलता हासिल की है, उन्हें बधाई देते हुए डा. ठाकुर ने किसी न किसी कारण से असफल हुए विद्यार्थियों को निराश नहीं होने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि असफलता में ही सफलता का बीज छुपा होता है। बेहतरीन परीक्षा परिणाम हासिल करने हुए इस कॉलेज के विद्यार्थियों में रामजीत कुमार मेहता (375), ओपेशी दास (367), कौशतवजीत बाग (360), कमरून निशा (356), स्वीटी कुमारी (347), आयुषी राय (347), पूजा कुमारी (345), अतेशा गांगुली (337), अणु कुमारी (337), मेधा पाण्डेय (336), अघनाजीत चक्रवर्ती (332), नेहा राी (329), नाजिमा चमन (324), सुफियान हसन (323), ओलिविया चक्रवर्ती (323), गौरव कुमार (323), प्रियम कुमारी (322), रोशनी राय चौधरी (321), शबाना रूही (320), सदमुनी कुमारी (318), टी.देवप्रिय दीपकर (316), आरची बनर्जी (314), अभिषेक कुमार (310), राकेश चौधरी (309), देविका कुमारी (308), रहमत बानू (307), अनिता कुमारी (306), प्रमिला मुर्मू (306), प्रिया कुमारी (303), भास्कर सिंह (303), सबिता कुमारी (303), मनीषा सिंह (301), अमृत जय सिंह (300), स्वाति कुमारी (300), दिनेश कुमार वर्णवाल (300), आशा कुमारी (300), पूनचंद्रा मुर्मू (300) आदि के नाम शामिल हैं।





# पत्थलगड़ी- आंदोलन, जो बन गयी चुनौती



आदिवासियों की हजारों साल पुरानी प्रागैतिहासिक परम्परा पत्थलगड़ी इन दिनों पूरे झारखंड के लिये सुर्खियां बनी हुई है। कहने को तो यह पाषाणकालीन परम्परा आदिवासियों के लिये एक धरोहर है, लेकिन जिस तरह से हाल के दिनों में इसकी आड़ में अनैतिक कार्य सामने आ रहे हैं, उससे तो ऐसा ही लग रहा है कि एक आंदोलन अब चुनौती का रूप ले चुकी है। आदिवासियों का अस्तित्व आदिकाल से माना जाता रहा है। भारत के सनातन धर्म से इनका जुड़ाव रहा है, लेकिन बदलते समय के साथ उनके बीच विदेशी साजिश के तहत ईसाई मिशनरियों ने जिस तरह धर्मांतरण को बढ़ावा देकर अपना जाल फैला दिया है, उससे यह कहना गलत नहीं होगा कि पत्थलगड़ी अपने मूल से भटकने की राह पर चल पड़ा है। इतना ही नहीं, भोले-भाले आदिवासियों के बीच हिंसा का पुजारी और खून की होलियां खेलने वाले नक्सलियों का भी इसमें प्रवेश होता जा रहा है। हाल ही में पांच युवतियों से सामूहिक दुष्कर्म के बाद मुख्य आरोपी की सच्चाई और मामले में पादरी की गिरफ्तारी ने इसकी बानगी पेश की है। इसी मसले को लेकर जिस तरह का बवाल मचा और हजारों पुलिसकर्मी दिन-रात एक हो मिशन बनाकर कार्रवाई में लगे रहे, उसे देखते हुए तो यही कहा जा सकता है कि पत्थलगड़ी का आंदोलन अब सरकार के लिये एक चुनौती और एक बड़ा सिरदर्द बन चुका है।

## क्या है पत्थलगड़ी ?

विकिपीडिया की मांनें तो पत्थलगड़ी (गाड़े गये पत्थर) उन पत्थर स्मारकों को कहा जाता है, जिसकी शुरुआत ईसानी समाज ने हजारों साल पहले की थी। यह एक पाषाणकालीन परंपरा है, जो आदिवासियों

में आज भी प्रचलित है। माना जाता है कि मृतकों की याद संजोने, खगोल विज्ञान को समझने, कबीलों के अधिकार क्षेत्रों के सीमांकन को दर्शाने, बसाहटों की सूचना देने, सामूहिक मान्यताओं को सार्वजनिक करने आदि उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रागैतिहासिक मानव समाज ने पत्थर स्मारकों की रचना की। पत्थलगड़ी की इस आदिवासी परंपरा को पुरातात्विक वैज्ञानिक शब्दावली में ‘महापाषाण’, ‘शिलावर्त’ और ‘मेगालिथ’ कहा जाता है। दुनिया भर के विभिन्न आदिवासी समाजों में पत्थलगड़ी की यह परंपरा मौजूदा समय में भी बरकरार है। झारखंड के मुंडा आदिवासी समुदाय इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं, जिनमें कई अवसरों पर पत्थलगड़ी करने की प्रागैतिहासिक और पाषाणकालीन परंपरा आज भी प्रचलित है।

## झारखंड में इतिहास

‘पत्थलगड़ी’ को समझने के लिए झारखंड के इतिहास को पलटकर देखना होगा। झारखंड का आदिवासी इलाका आंदोलन का गढ़ माना जाता है। जानकार बताते हैं कि इस इलाके में पिछले तीन सौ वर्षों में जितने आंदोलन हुए हैं, उतने आंदोलन देश के किसी और इलाके में नहीं हुए हैं। इतना लम्बा आंदोलन देश में किसी और समुदाय ने नहीं किया है। अपने अस्तित्व को बचाने के लिए प्रतिकार करना आदिवासियों के खून में है। आदिवासियों का आंदोलन उनकी पहचान, स्वायत्तता और जमीन, इलाका एवं प्राकृतिक संसाधनों पर मालिकाना हक को लेकर अबतक चल रहा है। अब वे किसी भी कीमत पर अपनी बची-खुची जमीन, जंगल, पहाड़, जलस्रोत एवं खनिज सम्पदा को विकास एवं आर्थिक तरक्की के नाम पर कॉर्पोरेट घरानों को देने के लिए तैयार नहीं हैं।

## ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ संघर्ष

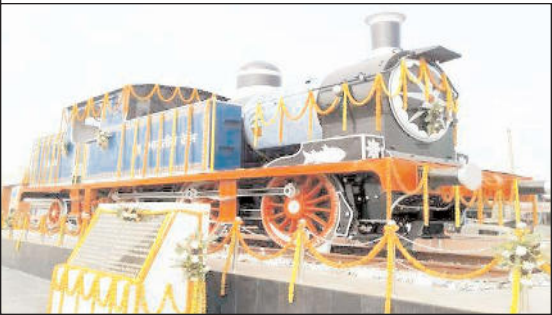
इतिहास बताता है कि औपनिवेशिक काल में आदिवासियों ने अपनी पहचान, स्वायत्तता और जमीन, इलाका एवं प्राकृतिक संसाधनों पर मालिकाना हक को लेकर ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ संघर्ष किया। ब्रिटिश हुकूमत ने जब आदिवासियों से जमीन का लगान मांगा, तब बाबा तिलका मांझी के नेतृत्व में 1770 में संघर्ष शुरू हुआ। आदिवासियों ने कहा कि जमीन हमें मरंग बुरू ने उपहार में दिया है। हम किसी सरकार को नहीं जानते हैं। इसलिए हम जमीन का लगान नहीं देंगे। इसी तरह 1855 में सिद्धो-कान्हू की अगुवाई में साठ हजार संतालों ने ब्रिटिश सरकार की हुकूमत को नकार दिया और 1895 में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में मुंडा दिसुम में उलगुलान का बिगुल फूँका

गया। ब्रिटिश हुकूमत को मजबूर होकर आदिवासियों की जमीन, संस्कृति एवं रूढ़ियों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए कानून बनाना पड़ा और आदिवासी इलाकों को वर्जित क्षेत्र घोषित करना पड़ा।

## औद्योगीकरण का विरोध, विकास में रोड़ा

इतिहासकार बताते हैं कि भारत की आजादी के बाद देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के द्वारा आदिवासी इलाकों में थोपे गये औद्योगिक विकास के खिलाफ आदिवासियों ने बिंगुल फूँका था। इधर, झारखंड राज्य के गठन के बाद वे अपनी बची-खुची जमीन, जंगल, पहाड़, जलस्रोत और खनिज सम्पदा को बचाने के लिए सरकार और औद्योगिक घरानों के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि झारखंड में देश की 40 प्रतिशत खनिज सम्पदा है। इसी खनिज सम्पदा के दोहन को लेकर झारखंड राज्य के गठन साथ ही राज्य में औद्योगिक नीति 2001 बनायी गयी, जिसे 2012 एवं 2016 में फिर से संशोधित किया गया। इस नीति के तहत कोडरमा से बहरागोड़ा तक सड़क के दोनों तरफ 25-25 किलोमीटर की परिधि में औद्योगिक गलियारा (इंडस्ट्रियल कोरिडोर) बनाया जायेगा। बताया जाता है कि उद्योग व उद्योगपतियों को बसाने के लिए झारखंड के आदिवासी और मूलवासियों को उजाड़ा जायेगा। इसी तरह झारखंड सरकार ने राज्यभर की 21 लाख एकड़ तथाकथित गैर-मजरूआ जमीन को ‘लैंड बैंक’ बनाकर उसमें डाल दिया है, जिसे औद्योगिक घरानों, निजी उद्यमियों एवं व्यापारियों को देना है। 16 एवं 17 फरवरी 2017 को रांची में आयोजित ‘ग्लोबल इन्वेस्टर्स सम्मिट’ में झारखंड सरकार ने कॉर्पोरेट घरानों के साथ 210 एमओयू पर हस्ताक्षर कर 3.10 लाख करोड़ रुपये में झारखंड का सौदा किया है। इसलिए झारखंड की जमीन, जंगल, पहाड़, जलस्रोत और खनिज सम्पदा को पूंजीपतियों को सौंपना है। लेकिन ‘पत्थलगड़ी’ कर आदिवासी लोग गांव-गांव में घोषणा कर रहे हैं कि उनके इलाकों में कोई भी बाहरी व्यक्ति नहीं घुस सकता है। इसका सीधा अर्थ है भूमि-अधिग्रहण में रोड़ा पैदा करना। यदि झारखंड के अनुसूचित क्षेत्रों के सभी गांवों में ‘पत्थलगड़ी’ किया जाता है तो सरकार को कहीं भी जमीन, जंगल, पहाड़, जलस्रोत और खनिज सम्पदा नहीं मिलेगी, जो निश्चय ही औद्योगिक विकास में एक बड़ी चुनौती मानी जा रही है। दूसरी तरफ, कुछ लोगों का यह भी मानना है कि अब आदिम युग जा चुका है। आदिवासियों को भी विकास की मुख्यधारा से जुड़कर वर्तमान सामान्य सामाजिक परिवेश से जुड़ना चाहिये, ताकि कोई उन्हें दिग्भ्रमित न कर सके, उनका धर्मांतरण न करा सके और उनके अधिकारों का हनन न हो सके।

## रेलवे ने रखा दरभंगा महाराज का मान



### विशेष संवाददाता

**दरभंगा** : गुजरे जमाने में दरभंगा महाराज द्वारा उत्तर बिहार में तिरहुत रेलवे का संचालन किया जाता रहा है, मगर रेलवे ने कभी भी तिरहुत रेलवे के जिक्र तक को तवज्जो नहीं दी। लंबी जद्दोजहद के बाद आखिरकार रेलवे ने महाराज दरभंगा के सम्मान में उनके निजी हैरिटेज रेल इंजन को दरभंगा रेलवे स्टेशन परिसर में स्थापित करने की दिशा में बीते हफ्ते पहल शुरू कर दी है। स्टेशन परिसर में इंजन स्थापना हेतु प्लेटफार्म बनाने का कार्य प्रारम्भ हुआ। इसे लेकर स्थानीय लोगों में खुशी देखी जा रही है। उल्लेखनीय है कि रेलवे के स्वर्णिम इतिहास से दरभंगा महाराज का गहरा नाता रहा है। अंग्रेजी हुकूमत के दौरान महाराज ने तिरहुत स्टेट रेलवे कंपनी बनाकर खुद अपनी रेलगाड़ी चलाई थी। कई स्टेशनों का निर्माण कराया था। पूर्व मध्य रेलवे ने उनके 145 वर्ष पुराने एक इंजन को धरोहर के रूप में संरक्षित करने की कवायद शुरू कर दी है। उसे दरभंगा स्टेशन पर लगाने के लिए समस्तीपुर रेल मंडल के प्रबंधक ने हाल ही में सरकार को पत्र भेजा था। रेलवे इससे पूर्व दो जगहों पर दरभंगा राज के रेल इंजनों को संरक्षित कर चुका है। हाजीपुर जोनल कार्यालय में तिरहुत स्टेट रेलवे के इंजन को धरोहर के रूप में रखा गया है। समस्तीपुर डीआरएम कार्यालय में भी एक इंजन संरक्षित है। दरभंगा राज के जानकार बताते हैं कि दरभंगा राज की बंद सकरी चीनी मिल में रेल इंजन जंग खा रहा था, जिसे संरक्षित करने की जरूरत थी। अंग्रेजी हुकूमत में दरभंगा महाराज की 14 कंपनियों में एक रेलवे विश्वविख्यात थी। इसकी स्थापना 1873 में तिरहुत स्टेट रेलवे नाम से महाराज लक्ष्मेश्वर सिंह ने की थी। 1873-74 में जब उत्तर बिहार भीषण अकाल का सामना कर रहा था, तब राहत व बचाव के लिए लक्ष्मेश्वर ने अपनी कंपनी के माध्यम से बरौनी के समयाधार बाजितपुर से दरभंगा तक रेल लाइन का निर्माण कराया था।

इस रेलखंड का परिचालन एक नवंबर 1875 को शुरू हुआ था। महाराज ने तीन स्टेशनों का निर्माण भी कराया था। दरभंगा स्टेशन आम लोगों के लिए था, जबकि

लहेरियासराय अंग्रेजों के लिए। उन्होंने अपने लिए नरगौना में निजी टर्मिनल स्टेशन का निर्माण कराया था। वहां उनकी सैलून रुकती थी। उनकी ट्रेन व सैलून से महात्मा गांधी और डॉ राजेंद्र प्रसाद जैसे स्वतंत्रता सेनानी सफर कर दरभंगा आते थे। 1922, 1929 और 1934 सहित पांच बार महात्मा गांधी इस ट्रेन से दरभंगा आए थे। दरभंगा महाराज के तिरहुत स्टेट रेलवे का अधिग्रहण भारतीय रेलवे में 1929 में किया था। धीरे-धीरे दरभंगा महाराज के योगदान को भुला दिया गया था, परंतु पिछले कुछ वर्षों में रेलवे ने दरभंगा महाराज की यादों व धरोहरों को संजोने में रुचि दिखायी है। रेलवे की 150वीं जयंती पर प्रकाशित स्मारिका में दरभंगा महाराज के शाही सैलून की तस्वीर छपी गई। निवर्तमान डीआरएम अरुण मल्लिक ने दरभंगा जंक्शन पर एक भव्य बोर्ड लगाया, जिसमें दरभंगा रेलवे की स्थापना में महाराज के योगदान का उल्लेख है। डीआरएम रविंद्र जैन ने दरभंगा स्टेशन से जुड़ी कई दुर्लभ पेंटिंग्स एकत्रित कर प्लेटफार्म संख्या एक पर लगाने का काम किया है।

## सीतामढ़ी के लाल के जिम्मे आंध्र प्रदेश पुलिस



**सीतामढ़ी** : मिथिला-भूमि सीतामढ़ी का मान एक बार फिर बढ़ा है। सीतामढ़ी निवासी भापुसे अधिकारी आरपी ठाकुर आंध्र प्रदेश के नए पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) बनाये गये हैं। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्र बाबू नायडू ने निवर्तमान डीजीपी मालकोंडय्या की सेवानिवृत्ति कार्यक्रम के बाद आरपी ठाकुर को नया डीजीपी नियुक्त किया। वर्ष 1986 बैच के आईपीएस अधिकारी श्री ठाकुर पहले भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) विभाग में कार्यरत रहे हैं। विदित हो कि श्री ठाकुर का जन्म बिहार के सीतामढ़ी जिले के चौरौत प्रखंड स्थित अमनपुर गांव में 1 जुलाई, 1961 में हुआ था। उन्होंने आईआईटी, कानपुर में सिविल इंजीनियरिंग विभाग में बीटेक की डिग्री हासिल की थी। श्री ठाकुर वर्ष 2002 से 2007 तक पटना में सीआईएसएफ के डीआईजी भी रह चुके हैं।

## रामगढ़ में गौ-रक्षकों की जमानत को लेकर हर्ष झूठ पर हुई इंसाफ की जीत : चौधरी



### विशेष संवाददाता

**रामगढ़** : भाजपा के पूर्व विधायक व अटल विचार मंच के संयोजक शंकर चौधरी ने कहा कि बीते 29 जून, 2017 का दिन रामगढ़ के लिए काला दिन था, लेकिन एक साल बाद 29 जून 2018 का दिन बहुत खुशी का दिन है, जो हमें उच्च न्यायालय से इंसाफ मिला है। झूठ पर हमेशा ही सच की विजय और इंसाफ का फतह होता ही है। श्री चौधरी ने गौ-रक्षकों को जमानत मिलने के बाद प्रसन्नता व्यक्त करते हुए पत्रकारों से बातचीत में उक्त बातें कही। उन्होंने मामले में बहस करने वाले केस के जमानतकर्ता अधिवक्ता वीएम त्रिपाठी को भगवानतुल्य बताते हुए उनके योगदान को अविस्मरणीय बताया। श्री त्रिपाठी ने 45 मिनट तक इस मामले पर न्यायालय के समक्ष अपना पक्ष रखा और 12 में से आठ गौ-रक्षकों भाजपा नेता नित्यानंद महतो, संतोष सिंह, रोहित ठाकुर, कपिल ठाकुर, उत्तम राम, सिकन्दर राम, राजू कुमार व विककी साव को जमानत दिलायी। न्यायालय और उच्च न्यायालय का शुक्रगुजार है, चार गौ रक्षक छोटू वर्मा, दीपक मिश्रा, विक्रम कुमार व छोटू राणा जो आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं, उनलोगों को भी एक सप्ताह के अंदर जमानत मिल जायेगी। सभी गौ रक्षकों को जमानत मिलने के बाद 12 गौ रक्षक परिवारों को लेकर रामगढ़ में एक विशाल जुलूस निकाली जायेगी। इस दिन विजय उत्सव मनाया जायेगा। पूर्व विधायक शंकर चौधरी ने स्थानीय सांसद पर निशाना साधते हुए कहा कि घटना में सबसे ज्यादा शर्मनाक भूमिका यदि किसी एक व्यक्ति की रही, तो हमेशा उन्होंने झूठ का सहारा लिया। उन्होंने कहा कि उच्च न्यायालय के रिटायर जज व सीनियर वकील को रख दिया है, उन्होंने ये भी कहा कि वकील की फीस भी हम देंगे और जो गौ रक्षक जेल में है, उनकी आर्थिक मदद करेंगे, लेकिन सांसद द्वारा इन आठों गौ रक्षकों को किसी प्रकार की आर्थिक मदद नहीं दी गई। जो जनप्रतिनिधि दुरुख की घड़ी में अपने कार्यकर्ताओं व जनता के लिए काम नहीं आये, उनकी इस लोकसभा क्षेत्र में आवश्यकता नहीं है।

**सीबीआई जांच की मांग** : श्री चौधरी ने प्रदेश के मुख्यमंत्री से भी विनती करते हुए कहा कि जनता की भावनाओं को देखते हुए अब भी वक्त है मामले की सीबीआई जांच कराये, अन्यथा इस आग की चिंगारी में कौन-कौन जलेगा ये तो भगवान ही जान सकते हैं। उन्होंने अंत में पुनः उच्च न्यायालय का आभार व्यक्त किया है। प्रेसवार्ता में बलराम कुशवाहा, नमेंद्र चंचल कमलनाथ महता, पंकज महतो व जमानत पर रिहा हुए आठों गौ रक्षकों के परिजन आदि मौजूद थे।





# गुरु क्रांति के सूत्रधार हैं

नंदकिशोर श्रीमाली

**गुरु सेवा परमो धर्मः।** गुरु का ऋण उतारा नहीं जा सकता है, पर गुरु कार्य में सहयोग देकर आप गुरु की ज्ञान को प्रवाहित करने में सहायता कर सकते हैं। गुरु समाज के लिए होते हैं और सामाजिक कार्यों में सहयोग वास्तविक रूप में गुरु सेवा ही है।

बंदउ गुरु पद पदुम परागा।

सुरुचि सुवास सरस अनुरागा॥

गुरु और शिष्य का संबंध सांसारिक रिश्तों से भिन्न होता है। गुरु शिक्षक नहीं होता है, वरन् वे आपको एक ऐसे आयाम पर स्पर्श करते हैं, जहां आपको कोई और छू नहीं सकता है। अन्य संबंध जैसे पति-पत्नी, माता-पिता, संतान के साथ सुख का संबंध होता है। दुख में इन संबंधों में थोड़ी उद्विग्नता आ जाती है। सिर्फ गुरु का दरबार है, जहां आप दुनिया से हटाए और निराश होकर पहुंचते हैं। जब आप बाधाओं से हार जाते हैं, उस क्षण आपको गुरु स्मरण आते हैं। इसीलिए गुरु-शिष्य का संबंध ऊर्जा पर आधारित है और गुरु आपके आज्ञाचक्र पर स्पर्श कर आपकी सुप्त ऊर्जा को जागृत कर देते हैं। शरीर और मन की सतह से ऊपर गुरु आपकी ऊर्जा को स्पर्श करते हैं। इसलिए जब विघ्न और बाधाओं से आप गिर जाते हैं और स्वयं को कमजोर अनुभव करते हैं और आपको ऊर्जा के स्तर पर थोड़ा सहारा चाहिए, तब आप गुरु के समक्ष उपस्थित होते हैं। जिस क्षण आप गुरु चरणों में नतमस्तक होते हैं, उस क्षण शक्तिपात की क्रिया संपन्न होती है। सीधे शब्दों में कहा जाए तो आपको ऊर्जा वही दे सकता है, जो ऊर्जा के स्तर पर आपसे कई गुना अधिक हो। ऊर्जा का अक्षय स्रोत गुरुदेव हैं और वह ऊर्जा, जो दीक्षा संस्कार में गुरुदेव आपमें प्रवाहित करते हैं, वह उनका तपस्यांश है। इसलिए गुरु के लिए कबीरदास कहते हैं-

गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान।

तीन लोकों की संपदा, सो गुरु दीन्ह निदान॥

गुरु और शिष्य का संबंध आत्मा का संबंध है। इस संबंध में सिर्फ निःस्वार्थ प्रेम होता है। गुरु के साथ जो आपकी स्नेह की डोर बंधी है, यह छोटे-मोटे आदर के

भाव से परे है। इस संबंध में आधार अटूट श्रद्धा है, क्योंकि यह हृदय का हृदय से मिलन है।

न गुरोरधिकं, न गुरोरधिकं...

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जो सांसारिक रिश्ते एक दूसरे के लिए नहीं कर सकते हैं, उससे कई गुना अधिक गुरु शिष्यों के लिए करते हैं। सांसारिक संबंधों की परख के विषय में आचार्य चाणक्य बताते हैं-

जानीयात् प्रेषणे भृत्यान् वान्धावान् व्यसनागमे

मित्रं चापदि काले च भार्या विभक्तये॥

सेवक या नौकर परीक्षा जरूरी कार्य आने पर होती है,

हैं, तब खाली होकर जाते हैं, क्योंकि खाली गिलास को ही भरा जा सकता है, भरे हुए गिलास में कुछ भी डालो, छलक ही जाएगा।

पूर्वाग्रहों से भरे हुए जब आप गुरु के समक्ष उपस्थित होते हैं, उस क्षण आपका शिष्य गुरु चरणों में झुकता है, पर मन नहीं। शिष्य के जीवन का धर्म गुरु होते हैं और उसके लिए गुरु से बढ़कर कुछ भी नहीं है।

गुरादिनादिश्चः गुरुः परम् दैवतम्।

गुरु मंत्रसमो नास्ति तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

गुरु को मन उत्सर्ग करना पड़ता है। इस रिश्ते में छल



आपत्ति काल के समय में मित्र की और धन का क्षय हो जाने पर भार्या की। पर गुरु, उनके पास तो आप आपत्ति और कष्ट के समय ही पहुंचते हैं और गुरु बेचैन हो जाते हैं कि कैसे आपके कष्टों को हर लिया जाए। गुरु की करुणा बरस पड़ती है और गुरु चाहते हैं कि मेरी सारी संपदा मेरे प्रिय शिष्य को मिल जाए। यही गुरु की करुणा है, गुरु का महत्व है और गुरु की महिमा है। इसलिए गुरु आप पर बार-बार प्रहार करते हैं, एक कुम्हार की भांति, क्योंकि गुरु अपने आपको आप में उड़ेल देना चाहते हैं। याद रखें, जब गुरु के दर जाते

नहीं चलेगा। गुरु सब देख लेते हैं कि आप आधे-अधूरे मन के साथ जुड़े हैं, या फिर आपने वाकई गुरु चरणों में मन समर्पित कर दिया है। जान लें, मनहि दिया निज सब दिया, मन से संग शरीर गुरु को धारण किया जाता है और जिसे धारण करते हैं, उसे ही धर्म कहते हैं। गुरु धरती पर लोक कल्याण के निमित्त आते हैं।

रामकृष्ण सबसे बड़ा उनहूँ तो गुरु कीन्ह।

तीन लोक के वे धनी गुरु आज्ञा अधीन॥

श्रीराम के गुरु वशिष्ठ और विश्वामित्र थे और श्रीकृष्ण

के गुरु सांदीपन ऋषि थे। गुरु क्रांति के सूत्रधार हैं। समाज की जीर्ण-क्षीण मान्यताओं के खिलाफ गुरु ज्ञान की मशाल जलाते हैं। गुरु आपसे यह नहीं कहेंगे कि तुम बाधाओं से डरकर दुबक जाओ, पर रात चाहे कितनी भी अंधेरी हो, गुरु आपके साथ ज्ञान की लौ जलाये चल पड़ेंगे। जब सारे जमाने के रिश्ते नाते साथ छोड़ देते हैं, उस समय अगर कोई साथ देते हैं तो वह गुरु ही होते हैं।

गुरु एक चेतना हैं। एक ज्ञान, एक खुशबूदार हवा का झोंका, एक जलता हुआ चिराग, एक विचार जो आपके जीवन को एक नई दिशा प्रदान करते हैं। अगर आप गुरु के दैहिक रूप में उलझ गए, तो आपकी मुक्ति कठिन है, क्योंकि गुरु ने भरमाया और आप भ्रमित हो गए।

जैहिं खोजत ब्रह्मा थके, सुर नर मुनि अरु देवा

कहै कबीर सुन साधवा, करो सतगुरु की सेवा।

जिस मुक्ति को खोजते-खोजते ब्रह्मा, सुर, नर, मुनि और देवता सब थक गए, उसे प्राप्त करने का मार्ग गुरु की सेवा है। गुरु का सांसारिक रूप शिष्य को भ्रमित करने के लिए होता है। जब आप यह सोचते हैं कि गुरु भी मेरे जैसे हैं, उन्हें भी भूख-प्यास लगती है, बुखार आता है, सर्दी-जुकाम होता है, उस क्षण आप पर तर्क या लौजिक हावी हो जाता है। ऐसे में आप गुरु को धारण नहीं कर सकते। जब आप देवालय में देव प्रतिमा को प्रस्तर समझिएगा, तो उसके समक्ष मनोकामना पूर्ति हेतु प्रार्थना मत कीजिएगा, क्योंकि आस्था भावना का विषय है। जब आप गुरु को धारण करते हैं, उस क्षण आप एक हाड़-मांस के शरीर को नहीं, वरन् गुरु की ज्ञान गंगा को अपनाते हैं और उसके बाद जीवन में रस का प्रवाह शुरू होता है।

श्रीमद् भागवत 10.80.34 में श्रीकृष्ण उद्धव से कहते हैं कि- मैं कोई भी कर्म या धर्म हो, उससे प्रसन्न नहीं होता। पर मैं प्रसन्न उस समय होता हूँ, जब व्यक्ति गुरु को धारण करता है। पुनः श्रीकृष्ण कहते हैं कि गुरु ही मेरे इष्टदेव हैं, मेरे बंधु, मेरी आत्मा हैं और जो स्नेह मेरा गुरु के प्रति है, वह किसी भी अन्य सांसारिक संबंध के प्रति नहीं है। स्पष्ट है, धारण करने योग्य जीवन में एकमेव सत्ता गुरु की है और शिष्य के जीवन का धर्म गुरु हैं।

गुरु मध्ये स्थितम् विश्वम्, विश्वमध्ये स्थितो गुरुः।

गुरुर्विश्वं न चान्योऽस्ति तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

## कहीं आपके घर में पौधे तो नहीं दे रहे हैं वास्तु दोष



घर में पेड़ लगाने से हरियाली आती है और घर में रहने वाले लोग हमेशा स्वस्थ रहते हैं, लेकिन कई बार आपके द्वारा लगाए गए पेड़-पौधे अच्छे परिणाम नहीं देते, क्योंकि उनमें

वास्तुदोष होता है। तो आइए जानें, वास्तुदोष कैसे दूर करें?

- घर की पूर्व दिशा में पीपल का पेड़ लगा हो तो इससे घर में भय और निर्धनता आती है।

- घर की पूर्व दिशा में बरगद का पेड़ होने से समस्त मनोकामनाएं पूरी होती हैं।
- घर की दक्षिण दिशा में पाकड़ और कांटेदार पेड़ होने से घर में रोग पनपते हैं।
- घर की दक्षिण दिशा में गूलर का पेड़ शुभ फलदायक होता है।
- घर के पिछवाड़े या दक्षिण की ओर फलदार वृक्ष शुभ होते हैं।
- घर के उत्तर में गूलर और नींबू का पेड़ होने से आंखों से संबंधित बीमारियां होती हैं।
- पूर्व और उत्तर दिशा में फलदार पेड़ लगाने से संतान पीड़ा अथवा बुद्धि नाश होता है।
- तुलसी का पौधा घर की पूर्व या उत्तर दिशा में लगाएं।
- घर के दक्षिण में तुलसी का पौधा कठोर यातना देता है।

(साभार : जीवन मंत्र)

## मानसून में सेहत का रखें ख्याल, हो सकती है ये परेशानियां



मानसून यानी जोरदार बारिश का दौर। इस मौसम में सेहत का काफी ध्यान रखने की जरूरत है। बारिश में स्वास्थ्य के लिये कई परेशानियां हो सकती हैं, जिन्हें लेकर सावधानी बरतने की जरूरत है। आइये जानते हैं कैसे-

**1. कई तरह के इन्फेक्शन :** मानसून में कई तरह के इन्फेक्शन होने की संभावना होती है। इनमें आम सर्दी जुकाम से लेकर टायफाइड तक शामिल हैं।

**2. बड़ी बीमारियां :** ये समस्याएं ज्यादा परेशान कर देती हैं। इनमें श्वसनतंत्र में इन्फेक्शन, निमोनिया, हेपेटाइटिस, क्लोरिया, पोलियो और

टायफाइड शामिल हैं।

**3. मलेरिया :** मलेरिया बहुत तेजी से और बहुत बड़े पैमाने पर फैलता है। यह हवा और पानी जनित इन्फेक्शन का परिणाम है।

**4. तापमान में गिरावट से होने वाली मुश्किलें :** बारिश के बाद तापमान नीचे जाता है ऐसे में सर्दी, अस्थमा और डायबिटीज की समस्या नजर आ सकती है।

**5. एलर्जी :** एलर्जिक राइनइटिस से जूझ रहे लोगों की नाक के अंदर के टिश्यू सूज जाते हैं और उनकी नाक बंद हो जाती है। इन्हें सांस लेने में तकलीफ होने लगती है।

**6. सिरदर्द :** बारिश से पैदा हुई स्वास्थ्य समस्याओं तेज या हल्का सिरदर्द शामिल है। यह शरीर में हो रहे विभिन्न बदलावों की स्थिति में तालमेल बिठाने की समस्या के चलते पैदा होता है।

**7. आर्गन डेमेज करने वाली समस्याएं :** लेप्टोस्पायरोसिस बैक्टेरिया के कारण होता है। यह किसी इंसान या जानवरों में पलता रहता है। अधिक घातक रूप लेने पर यह किडनी, लिवर और श्वसनतंत्र को भारी नुकसान पहुंचाता है।



**मेघ (चू चे चो ला ली लू ले लो आ) :** स्वास्थ्य का ख्याल रखें, थोड़ी परेशानी हो सकती है। जीवन सुखमय एवं आनन्ददायक गुजरेगा। बुरे कर्म वाले लोगों से दूरी बनाएं। धनागम के योग। वाणी पर संयम रखें। व्यर्थ के झगड़े-विवाद से दूर रहें। रोजगार के योग बनेंगे। शत्रु पराजय होंगे।

**वृष (ई उ ए ओ वा वी वू वे वो) :** स्वास्थ्य में थोड़ी परेशानी। रुके हुए धन की प्राप्ति के योग। प्रतिष्ठित लोगों से लाभ। कार्यों की सफलता में देरी। दाम्पत्य जीवन में थोड़ी कड़वाहट।

**मिथुन (का की कू घ ड छ के को हा) :** स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। धनागम के योग। राज्याधिकारियों से मुलाकात। चल सम्पत्ति को लेकर वाद-विवाद। शत्रुओं पर विजय। कर्तव्य-निर्वहन में सावधानी बरतें।

**कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो) :** सप्ताह के शुरू में स्वास्थ्य थोड़ा बिगड़ेगा, लेकिन सप्ताहांत तक सुधार होंगे। स्त्री से रिश्ते बिगड़ेंगे। विवाद से दूर रहें। शत्रुओं पर विजय। बुद्धि में भ्रम पैदा होगा। पति या पत्नी के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है।

**सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे) :** सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होगी। लाभ में भी बढ़ोतरी होगी। वाणी पर संयम रखें। शत्रुओं पर विजय। अच्छा स्वास्थ्य एवं मानसिक सुख प्राप्त करेंगे।

**कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) :** इस सप्ताह मन प्रसन्न रहेगा। पदोन्नति या व्यवसाय में वृद्धि। विद्यार्थी-वर्ग को सफलता मिलेगी। चल सम्पत्ति सम्बन्धी निर्णय सोच-विचार कर लें। शत्रुओं पर आसानी से विजय। मनोकामनाएं पूर्ण हो सकती हैं।

**तुला (रा री रू रे रो ता ती तू ते) :** स्वास्थ्य में सुधार। धन की प्राप्ति के योग बनेंगे। सुख-आनन्द की प्राप्ति। मनोरंजन की योजनाएं बनेंगी। नेत्र-कष्ट हो सकते हैं। वाहनादि के योग बनेंगे।

**वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू) :** स्वास्थ्य में थोड़ी सुस्ती महसूस होगी। स्वजनों से मनमुटाव। संगीत से लगाव। वाणी पर संयम रखें। मानसिक चिंता बढ़ सकती है। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी।

**धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे) :** मन चंचलता से भरा होगा। निर्णय लेने में सावधानी बरतें। साहस में बढ़ोतरी। वाणी पर संयम रखें। धन की प्राप्ति। विद्या की बढ़ोतरी। स्त्री-सुख मिलेगा। गायन-वादन में रुचि बढ़ेगी।

**मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी) :** स्वास्थ्य में सुधार। शत्रुओं का नाश होगा। मित्रों से सहायता। लोहे, कोयला आदि से व्यावसायिक लाभ मिलेगा। पदोन्नति होगी। व्यय अधिक हो सकते हैं।

**कुम्भ (गू गे गो सा सी सू से सो दा) :** स्वास्थ्य पर ध्यान दें। नेत्र सम्बन्धी समस्या हो सकती है। पदोन्नति के योग। पिता से धन-लाभ। भोजन से अरुचि।

**मीन (दी दू थ झ दे दो चा ची) :** स्वास्थ्य पर मौसम का बुरा प्रभाव पड़ेगा। जल सम्बन्धी व्यवसाय से लाभ। मित्रों और पारिवारिक सदस्यों से मुलाकात होगी।

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें-

7808820251





# राज्यपाल के हाथों नवाजे गये पत्रकार मदन मोहन



## पूर्व मुखिया रामसखा को भी मिला सम्मान

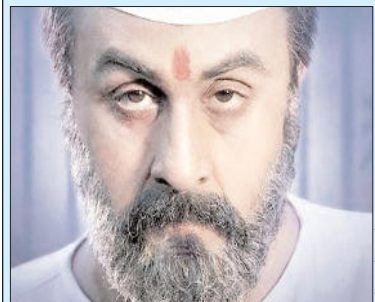
संवाददाता  
पुपरी (सीतामढ़ी) : पत्रकारिता एवं कृषि के क्षेत्र में विशिष्ट सहभागिता के लिए 'समकालीन तापमान' के स्थानीय ब्यूरो चीफ मदन मोहन ठाकुर एवं बररी बेहटा के पूर्व मुखिया रामसखा चौधरी को स्वामी सहजानन्द सरस्वती सम्मान गोवा प्रदेश की राज्यपाल डा. मृदुला सिन्हा के कर-कमलों से प्रदान किया गया। स्वामी सहजानंद वाहिनी के अध्यक्ष रवीन्द्र रंजन द्वारा पटना के बीआईए सभागार में अमर लोकनेता स्वामी सहजानंद की 68वीं पुण्यतिथि समारोह का आयोजन किया गया था। समारोह की मुख्य अतिथि बिहार की बेटी, विदुषी, लेखक एवं गोवा की राज्यपाल डा. मृदुला सिन्हा थीं। इस अवसर पर उत्कृष्ट कृषि उत्पादन करने वाले अनेक किसानों को सम्मानित किया गया, वहीं सीतामढ़ी जिला अंतर्गत पुपरी निवासी वरिष्ठ पत्रकार मदन मोहन ठाकुर एवं बररी बेहटा के पूर्व मुखिया एवं आरएन फिश हैचरी के प्रोपराइटर रामसखा चौधरी को अपने क्षेत्र में विशिष्ट सहभागिता के लिए राज्यपाल डा. मृदुला के हाथों सम्मान-पत्र दिया गया। स्वामी सहजानंद समिति के अध्यक्ष पं महेन्द्र मिश्र, कार्यकारी अध्यक्ष उदय सिंह करणाकर, राकेश चौधरी, राजनंदन चौधरी, अरुण कुमार ठाकुर, सुमन कुमार सिंह, कुमारी पूनम समेत कई समाजसेवियों ने राज्यपाल डा. सिन्हा तथा स्वामी सहजानंद किसान वाहिनी, पटना के अध्यक्ष रवीन्द्र रंजन के प्रति आभार व्यक्त किया है। इन सदस्यों ने अपने-अपने वक्तव्य में कहा है कि केवल दो व्यक्ति ही नहीं, संपूर्ण पुपरी एवं सीतामढ़ी इस सम्मान से गौरवान्वित हुआ है।

## ज्येष्ठ पूर्णिमा पर भजन संध्या आयोजित

संवाददाता  
बोकारो : नगर के सेक्टर-4 एफ स्थित सूर्य मंदिर में ज्येष्ठपूर्णिमा के अवसर पर भजन संध्या का आयोजन किया गया। भास्कर सेवक समिति के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में वरिष्ठ संगीतज्ञ ब्रजमोहन पाठक, आर एन दुबे, अरुण पाठक, शोफाली दुबे, शंभु सिंह, पं. शिवपूजन मिश्र, जितेन्द्र मिश्र, अखिलेश कुमार आदि ने अपनी प्रस्तुतियों से वातावरण में भक्तिरस का संचार कर दिया। शुरुआत आचार्य ब्रजमोहन पाठक ने झपताल में 'नीलाभ श्यामल का.. सुनाकर की। तत्पश्चात उन्होंने रुपक ताल में 'अधमों को नाथ उबारना..' व एकताल में 'वृंदावन कुंजधाम..' की प्रस्तुति की। अरुण पाठक व शोफाली दुबे ने 'संसार है इक नदिया सुख-दुख दो किनारे है..' व महाकवि विद्यापति की रचना 'माधव कते तोर करब बड़ाई..' की भावपूर्ण प्रस्तुति से सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। तबले पर पं. शिवपूजन मिश्र व अखिलेश कुमार तथा हारमोनियम पर आरएन दुबे व शंभु सिंह ने संगत की। मौके पर भास्कर सेवक समिति के सीबी मिश्रा, जय शंकर मिश्र, पं. गुप्तेश्वर मिश्र, सरयुग प्रसाद, अनुराग मिश्र, आनंद सिंह, राम भागवत साहू सहित अन्य श्रद्धालु मौजूद थे।



## बड़े परदे पर धूम मचा रही 'संजू'



फिल्मी दुनिया के संजू बाबा यानी संजय दत्त की जिन्दगी पर आधारित फिल्म 'संजू' ने अपनी रिलीज के साथ ही बड़े परदे पर धूम मचाना शुरू कर दिया है। राजकुमार हिरानी की फिल्म 'संजू' के जलवे पहले शो से ही नजर आने लगे। फिल्म विशेषज्ञों की मानें तो राजकुमार हिरानी की यह फिल्म पिछली फिल्मों से अलग है। फिल्म संजय दत्त की केवल दो बुराइयों पर यह फोकस करती है। ड्रम्स और टाडा के दाग को यहां साफ करने की कोशिश की गई है। फिल्म के लिए माहौल काफी अच्छा बना तो इसके शो फुल चल रहे हैं। इस लिहाज से लग रहा है कि फिल्म अपनी शुरुआत में ही करोड़ों की अच्छी-खासी कमाई करने वाली है। रिलीज के पहले दिन ही संजू ने लगभग 35 करोड़ रुपए कमा लिए हैं। इसके साथ ही इस फिल्म ने

कमाई के सारे पिछले रिकार्ड तोड़ शीर्ष पर अपना स्थान बना लिया है। यह सलमान की ही फिल्म 'टाइगर जिंदा है' के ऑलटाइम रिकार्ड को भी तोड़ दिया है। रणबीर कपूर अभिनीत 'संजू' ने तमाम रिकार्ड ध्वस्त किए हैं और भारत की सबसे बड़ी ओपनिंग (बिना छुट्टी वाले दिन की) हासिल करने वाली फिल्म बन गई है। सलमान की फिल्म 'टाइगर जिंदा है' ने पहले दिन 34.10 करोड़ रुपए पहले दिन कमाए थे, यह भी छुट्टी का दिन नहीं था। रणबीर की फिल्म ने 34.75 कमाए हैं। फलस्वरूप संजू को बेशक साल 2018 की सबसे बड़ी रिलीज कहा जा सकता है। पौने तीन घंटे की इस फिल्म में संजय दत्त इसमें अपनी कहानी खुद सुना रहे हैं। जबकि उनके किरदार को बखूबी निभाया है रणबीर कपूर ने। इस फिल्म से रणबीर ने अपनी एक्टिंग का एक नया आयाम स्थापित किया है। फिल्म में दीया मिर्जा, मनीषा कोइराला, अनुष्का शर्मा सबकी मौजूदगी इसे खास बनाती है, लेकिन रणबीर कपूर सब पर भारी हैं। विक्की कौशल फिल्म में रणबीर कपूर के दोस्त का किरदार निभा रहे हैं। उनका रोल हर हीरोइन से ज्यादा है। विक्की ने किया भी बढ़िया है। रणबीर के बाद वे ही इस फिल्म में याद रहते हैं।

## ‘शहरों में कोई सलामत नहीं कातिल के सिवा’ आचार्य ज्योतीन्द्र जन्मशताब्दी समारोह में बही काव्य-रसधार

संवाददाता  
नई दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय स्थित गेस्ट-हाउस में आचार्य ज्योतीन्द्र प्रसाद झा 'पंकज' जन्म-शताब्दी समारोह के अवसर पर काव्य सरिता बहती रही। आज के झारखंड और तब के बिहार के संताल परगना के स्वाधीनता सेनानी, शिक्षक, कवि और विद्वान आचार्य स्वर्गीय ज्योतीन्द्र प्रसाद झा पंकज के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केन्द्रित एक परिचर्चा एवं काव्य-गोष्ठी सह मुशायरा में साहित्यकारों, विद्वानों और शोधार्थियों के जमघट में मशहूर शायर कुलदीप सलिल ने जब शहरों में कोई सलामत नहीं कातिल के सिवा जैसी गजलों सुनाई तो सभास्थल में बैठे सैकड़ों श्रोता मंत्रमुग्ध होकर झूमने लगे।

सुविख्यात हिन्दी कवि उपेन्द्र कुमार की कविता जब 'रिसते रिशतों' की बयानी करने लगी तो सबके मुंह से सहसा 'वाह-वाह' और 'आह' निकालने लगे। मैथिली के वयोवृद्ध साहित्यकार और मैथिली महाभारत के रचयिता बुद्धिनाथ झा जैसे आशु कवि की सभास्थल पर ही रचित कविताओं ने सबको चमत्कृत कर दिया। गोष्ठी में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के गजलकार शिवकुमार बिलग्रामी के अलावे अन्य महत्वपूर्ण कवि और शायर/शायरा डा. द्वारका प्रसाद चारुमित्र, डा. संजीव कौशल, डा. बलि सिंह, डा. अजय रंजन, डा. शंभु यादव, डा. वेदमित्र शुक्ल, सौरभ शेखर, नेहा सहर, सुषमा भण्डारी, सलमा साहीन, अरविंद

असर की कविताओं और गजलों ने सभास्थल को एक अविस्मरणीय काव्य-संगम बना डाला। मशहूर गजल गायक सतीश मिश्र ने अपनी गजल गायकी से सभा में उपस्थित सज्जनों को बेसुध कर दिया। समारोह के इस 'काव्य-गोष्ठी सह मुशायरा' सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार कुलदीप सलिल (उर्दू), उपेन्द्र कुमार (हिन्दी) और बुद्धिनाथ झा (मैथिली) के अध्यक्ष-मण्डल ने संयुक्त रूप से की, जबकि संचालन चर्चित युवा कवि डा. संजीव कौशल ने लिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में दिल्ली विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षक, शोधार्थी, छात्र एवं साहित्यकारों के अतिरिक्त 'पंकज'जी के परिवार के सदस्य भी उपस्थित थे।

## डेंगू का कारण बन रहे खाली डाभ

संवाददाता  
बोकारो : बोकारो इस्पात नगर में जहां-तहां फेंके हुए खाली डाभ के खोल (कोकोनट शेल) इन दिनों डेंगू का कारण बने हैं। जिला मलेरिया नियंत्रण समिति के अनुसार दुर्दीबाद हटिया, सिटी सेंटर, सेक्टर 4 सहित विभिन्न जगहों पर नारियल पानी के खाली खोल (कोकोनट शेल) डेंगू व मलेरिया के प्रकोप का कारण बनते जा रहे हैं। विगत वर्ष स्वास्थ्य विभाग मलेरिया योजना की विशेष टीम द्वारा स्टील सिटी के कई क्षेत्रों में कीट वैज्ञानिकी सर्वे किया गया था। सर्वे के दौरान उन स्थानों पर खाली नारियल डाभ में पानी भरे थे और उनमें में खतरनाक मच्छरों के लारवा पाये गये थे। इस तरह के जल-जमाव वाले जगहों

में एडिस मच्छरों की होने की संभावना रहती है, जिसके काटने से डेंगू बुखार होता है। विगत वर्ष एडिज मच्छर (डेंगू मच्छर) का लारवा सेक्टर 4, सिटी सेंटर, उकरीद मोड़, नया मोड़ तथा दुर्दीबाद हटिया में पाया गया था। जिले के सिविल सर्जन डा. सोबान मुर्मू के अनुसार वर्तमान में वर्षात प्रारंभ हो गया है। ऐसे में उक्त जगहों पर जलजमाव एवं गन्दगी की सफाई आवश्यक हो गई है। इस संबंध में सिविल सर्जन ने बोकारो इस्पात संयंत्र के मुख्य कार्यकारी पदाधिकारी को एक पत्र लिखकर सफाई हेतु आवश्यक कदम उठाने की मांग की है। उन्होंने इसे सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर क्रियान्वित करने का आग्रह किया है।

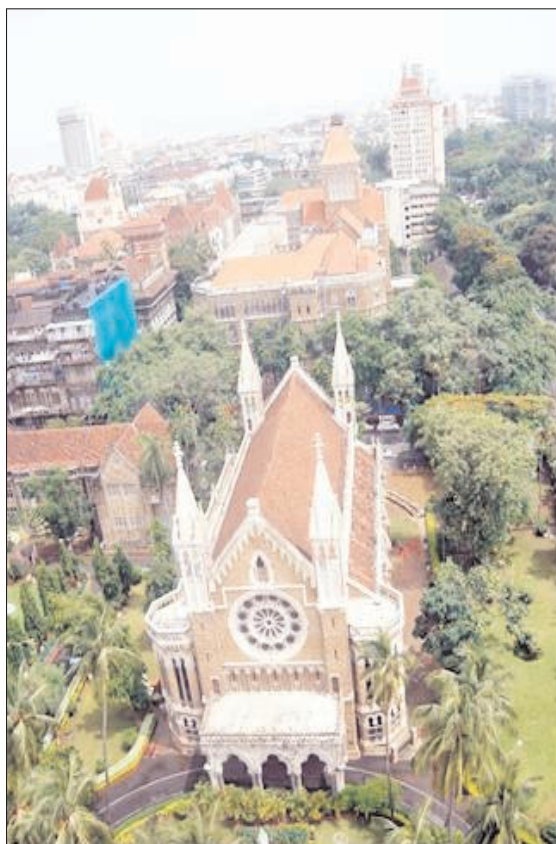






# यूनेस्को में भारत को फिर उपलब्धि

‘विक्टोरियन गोथिक एवं आर्ट डेको इंसेबल्स’ बना विश्व-धरोहर



नीरज कुमार झा

नई दिल्ली : भारत की विश्वस्तरीय पहचान व उपलब्धियों में एक और अहम कड़ी जुड़ गयी है। एक उल्लेखनीय उपलब्धि के रूप में भारत को उसका 37वां विश्व यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल मिला है। एक अन्य ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में भारत में मुंबई के

विक्टोरियन गोथिक एवं आर्ट डेको इंसेबल्स को यूनेस्को की विश्व धरोहर संपदा की सूची में अंकित किया गया। यह निर्णय बहरीन के मनामा में यूनेस्को की विश्व धरोहर समिति के 42वें सत्र में लिया गया। पीआईबी सूत्रों की मानें तो विश्व धरोहर समिति ने जैसी कि अनुशंसा की, भारत ने इंसेबल का नया नाम ‘मुंबई के विक्टोरियन गोथिक एवं आर्ट डेको इंसेबल्स’ स्वीकार कर लिया। भारत मानदंड (2) एवं (4) के तहत, जैसा कि यूनेस्को के संचालनगत दिशानिर्देशों में निर्धारित किया गया है, ‘मुंबई के विक्टोरियन गोथिक एवं आर्ट डेको इंसेबल’ को विश्व धरोहर संपदा की सूची में अंकित करवाने में सफल रहा है।

इसके साथ ही मुंबई सिटी अहमदाबाद के बाद भारत में ऐसा दूसरा शहर बन गया है, जो यूनेस्को की विश्व धरोहर संपदा की सूची में अंकित है। इस ऐतिहासिक क्षण पर केंद्रीय संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डा.महेश शर्मा ने मुंबई के निवासियों और पूरे देश को इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर बधाई दी है। उल्लेखनीय है कि यह इंसेम्बल दो वास्तुशिल्पीय शैलियों, 19वीं सदी की विक्टोरियन संरचनाओं के संग्रह एवं समुद्र तट के साथ 20वीं सदी के आर्ट डेको भवनों से निर्मित है। यह इंसेम्बल मुख्य रूप से 19वीं सदी के विक्टोरियन गोथिक पुनर्जागरण के भवनों एवं 20वीं सदी के आरंभ की आर्ट डेको शैली के वास्तुशिल्प से निर्मित है जिसके मध्य में ओवल मैदान है। यह उत्कीर्ण मानदंड (2) एवं (4) के तहत, जैसा कि यूनेस्को के संचालनगत दिशानिर्देशों में निर्धारित किया गया है। बता दें कि गोथिक कला मध्ययुगीन यूरोपीय वास्तु की एक शैली है, जो 12वीं शती के मध्य में फ्रांस में जन्मी। यह रोमनेस्क वास्तुकला से उद्भूत हुई है। इसके अतिरिक्त देश के 42 स्थल विश्व धरोहर की प्रायोगिक सूची में हैं। बता दें कि देश का संस्कृति मंत्रालय प्रत्येक वर्ष यूनेस्को को नामांकन के लिए एक संपत्ति की अनुशंसा करता है।

**चलो बुलाया आया है**

सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

**गुरु पूर्णिमा महोत्सव**

**26-27 जुलाई 2018**

आनन्द महोत्सव, अमृत महोत्सव, श्री महोत्सव, ज्ञान महोत्सव, ध्यान महोत्सव, आत्मीय महोत्सव, मिलन महोत्सव

प्रेम नगर आश्रम, ज्वालापुर रोड़, हरिद्वार

निखिल मंत्र विज्ञान, जोधपुर  
Ph. - 0291-2638209, 2624081

आरोग्य धाम, दिल्ली  
Ph. - +91-98910-51707

## पुराने व जटिल रोगों से हैं परेशान?



होमियोपैथ से निजात पाने के लिये संपर्क करें-

**डॉ. काशीश्वर किशोर**

DHMS (Distinction)

प्रो. भूपेन्द्र नारायण मंडल होमियोपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, सहरसा  
पूर्व सदस्य- होमियोपैथिक मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली

-: बैठने का स्थान :-

1. शांतिगंज सेक्टर, शांति नं.- 58, प्रथम तल्ला, को-ऑपरेटिव कॉलोनी, बी.एस. सिटी (सुबह 9.30 से 12.30 एवं संध्या 5.30 से 6.30)
2. जर्मन होमियो प्वाइन्ट, एफ/9, सिटी सेक्टर, सेक्टर-4, बीएस सिटी (शाम: 6.30-8.00)

Trusted Name for Medical (PMT) Exams preparation, with best Results since 7-Years.

**NIKHIL CLASSES**

(An Institute for PMT / Medical Exams Preparation)

**Medical** AIIMS | NEET

**Pre-Foundation** For Class 9th & 10th

**Board Exams** XI & XII

With Experienced & Expert team of Faculties in

**PHYSICS :** B.Tech. (IIT-KGP) 12 Years Experience Ex-Faculty FIIT-JEE, Brilliant Tutorial (New Delhi)

**CHEMISTRY :** Ex-Faculty from Renowned Institutes with 12 Years Experience

**Admission is going on**

**Contact : 09507812093 / 09308864493**

**Address : C1-17E, City Centre, Sector-4, Bokaro (Jharkhand) - 827004**

भूख, भय और घ्राणचार मुक्त झारखंड ही हमारा ध्येय

आइये इस मिशन में हमारा हाथ बंटाएं

**दीन दयाल शर्मा**

जिलाध्यक्ष (बोकारो)

**झारखंड जन क्रांति मोर्चा**

प्रधान कार्यालय : हरमू बाइपास रोड, कार्तिक उरांव चौक, एलएस- 46, हरमू हाउसिंग कॉलोनी, हरमू, रांची (झारखंड), पिन : 834002  
मो. : 09471768322, E-mail : dindayal.kr@gmail.com

**GA | EXCHANGE** **MARUTI SUZUKI** **Way of Life!**

**Easy Hai!!**

With the revolutionary auto gear shift technology.

**“Effortless driving speaks for itself”**

**Special Corporate Discount**  
**Sail/CCL/LIC/RAILWAY/HEALTH DEPARTMENT & BANK EMP.**

	<b>ALTO K10 (AMT)</b> Petrol 24.7 km/ltr <b>TOTAL SAVING ₹41,100/-</b>		<b>WAGON R (AMT)</b> Petrol 20.51 km/ltr <b>TOTAL SAVING ₹51,100/-</b>
	<b>CELERIO</b> Petrol 23.1 km/ltr <b>TOTAL SAVING ₹45,100/-</b>		<b>SWIFT</b> Petrol 20.4 km/ltr <b>NIL</b>

**HINDUSTAN AUTO AGENCY**  
आपके शहर का अपना माकसि शेकरम !!  
**R-1, City Centre, Sec-4, B. S. City, Mob : 9263631277**

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री - 12, सिटी सेक्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित।

सम्पादक : विजय कुमार झा, प्रबंध सम्पादक : दीपक कुमार झा, दिल्ली कार्यालय प्रमुख : नीरज कुमार झा, दिल्ली ब्यूरो : कैप्टन संजय, फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई नं.- 48973/89